एशियाई बालपुस्तक सहप्रकाशन सीरीज़

एशियाई सांस्कृतिक केन्द्र यूनेस्को द्वारा प्रायोजित

नौ एशियाई देशों द्वारा प्रस्तुत
बच्चों के लिए मनोरंजक कहानियां तथा रंगीन चित्र

सिंगापुर
ईरान
जापान
बंगला देश
बरमा
कम्बोडिया
लाओस
श्रीलंका
फिलिपीन्स

सूची

हर देश के बच्चों के लिए

यह पुस्तक बच्चों का एशियाई देशों के त्योहारों से परिचय कराती है। त्योहार नये कपड़े पहनने का, घर सजाने का, गीत गाने, पटाखे छोड़ने, बढ़िया खाना पकाने और शुभ कामनाएं देने-लेने का दिन होता है। इसका धार्मिक महत्व हो सकता है या किसी खास ऋतु से भी संबन्धित हो सकता है। चाहे श्रीलंका में हों या अफगानिस्तान में, त्योहार बहुत-कुछ मिलते-जुलते है। जीवन के आनन्द और प्रकृति की उदारता के प्रति कृतज्ञता सभी में पायी जाती है।

ह्सिआओ मिंग के साथ नया साल

चार वर्ष का गोल-मटोल लड़का बाग में खेल रहा था कि उसकी मां ने पुकारा, "ह्सिआओ मिंग! तुम्हारे लिए बड़ी अच्छी खबर है।"

मां के हाथ में एक खत था और उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था। "चीनी नव-वर्ष के लिए तुम्हारे पिताजी घर आ रहे हैं। खुश हो न?"

मां ने मिंग को गोद में उठा कर उसका मुंह चूम लिया।

चीनी नव-वर्ष को अभी दो दिन बाकी हैं जिसे चीनी 'को निएन' कहते हैं।

मिंग के पिता हर साल इस दिन घर आते हैं। मिंग को पिता की ठीक-ठीक याद नहीं, लेकिन उसकी मां बताती हैं कि वह किसी बड़े जहाज पर काम करते हैं जो सारी दुनिया की यात्रा करता है।

लेकिन ह्सिआओ मिंग को यह पता नहीं कि पिता त्योहार मनाने के लिए घर आते हैं या पिता घर आते हैं इसलिए त्योहार मनाया जाता है।

पिता के आने का दिन मिंग के लिए बड़ी खुशी का होता है। ढेरों मिठाइयां होती हैं और बहुत सारे पटाखे। उसके चाचा-चाची, मामा-मामी सब उसको लाल कागज के पैकेट देते हैं जिसके अन्दर रुपये होते हैं।

"मां, मुझको दुष्ट राक्षस निएन की कहानी फिर सुनाओ।" वह मां से कहता है।

मां मिंग को गोद में बिठा लेती है।

कहानी शुरू होती है, "किसी समय निएन नाम का एक बड़ा दुष्ट

राक्षस था। गांव के लोग डर के मारे कांपा करते थे क्योंकि नये साल के एक दिन पहले वह अपनी गुफा से निकलता और भोजन ढूंढता। लोग अपने घरों के दरवाजे-खिड़कियां बंद करके छुपे रहते।

"लेकिन निएन तीन चीजों से डरता था, लाल रंग से, आग से और पटाखों से। सो नये साल से पहले लोग अपने घरों के दरवाजे और खिड़कियां लाल रंग देते, और ढेरों पटाखे छोड़ते जिससे राक्षस पास न फटके।

"दूसरे दिन जब लोग जागते और खिड़कियों से झांकते तो निएन का कहीं अता-पता न होता। फिर वह अपने बढ़िया कपड़े पहनते, छक कर मिठाइयां खाते और राक्षस के भाग जाने की खुशी में जश्न मनाते। सब लोग खुशी मनाते कि अब पूरे एक साल तक दुष्ट राक्षस गांव में फिर नहीं आएगा।"

"यह जान कर कि अब कोई खतरा नहीं है, बच्चे अपने रिश्तेदारों के घर जाते, उन्हें नये साल की शुभ कामनाएं देते, और लाल रंग के पैकेट, जिसमें रुपये होते, लेकर वापस लौटते। 'को निएन' का यही मतलब है ह्सिआओ मिंग और इसी तरह हम इसे मनाएंगे।"

छोटे मिंग को कहानी बहुत अच्छी लगी। बाद में उसने 'को निएन' की तैयारियों में मां का हाथ बटाया।

उन्होंने सारे घर में झाड़ू लगाई, कमरों की सफाई की और सारी चीजों को करीने से सजाया। फिर मां ने नये साल के लिए मिठाइयां बनाईं।

दोपहर में मिंग ने मां के साथ नये साल के लिए आए कार्डों से बाहरवाले कमरे को सजाया।

दूसरा दिन नये वर्ष के पहले वाला दिन था। उस रोज तो मां को और भी ज्यादा काम था।

ह्सिआओ मिंग को निएन की कहानी याद थी। उसने घर के बाहर कुछ पटाखे जलाने का फैसला किया ताकि निएन अगर कहीं आस-पास मंडरा रहा हो तो भाग जाए।

मां ने सुबह ही पटाखे ला दिए थे। वह उन्हें लेकर भागा और बाहर दूसरे बच्चों के साथ मिल कर पटाखे जलाने लगा। वे खत्म हो गए तो और लाने फिर घर के अन्दर दौड़ गया। उसी तरह वह अन्दर-बाहर भागता रहा जब तक कि सारे पटाखे खत्म नहीं हो गए। बार-बार हंसता और कहता, "अब तो निएन जरूर डर जाएगा।"

अचानक पीछे से किसी ने उसको पुकारा। एक लम्बा सांवला-सा आदमी उसको ताक रहा था। ह्सिआओ मिंग शरमाता हुआ और कुछ सहमा-सा घर के अन्दर भागा। "मां, मां," उसने पुकारा!

उसकी मां रसोई से बाहर दौड़ी आई। उसके हाथ आटे में सने थे।

"आप आ गए?" उसने उस लम्बे परदेसी से कहा। फिर बोली, "ह्सिआओ मिंग, तुम्हारे पिता घर आ गए!"

"पापा," ह्सिआओ मिंग ने शरमा कर कहा।

उसके पिता उसकी ओर बढ़े, अपने छोटे बेटे को ऊंचा उठा कर चारों ओर घुमाया। मिंग ने खुशी-खुशी सोचा, 'यह लम्बा मजबूत आदमी मेरा पिता है!'

उस शाम को मां ने बहुत बढ़िया खाना बनाया। मां, पिता, और ह्सिआओ मिंग इकट्ठे खाने बैठे। चीनी घरों में साल में एक बार इस मौके पर ही सारा परिवार इकट्ठा होता है और साथ-साथ खाना खाता है।

खाते समय पिता अपनी समुद्र-यात्रा की कहानियां सुनाते रहे। छोटे मिंग ने सोचा, 'बड़े जहाज पर सैर करना कितना मजेदार होगा!'

दूसरे दिन पटाखों की आवाज ने मिंग को जगा दिया। जैसे ही उसने आंखें खोलीं, मां ने कहा, "नया साल मुबारक!"

"जल्दी उठो ह्सिआओ मिंग! हम तुम्हारे चाचा-चाची के घर जा रहे हैं। उसके बाद शेर का नाच देखने चलेंगे।"

छोटा मिंग जल्दी-जल्दी बिस्तर से निकला। मां ने नये कपड़े पहनाए, और फिर सारा परिवार बाहर निकला।

रास्ते में जिन घरों के सामने से वे गुजरे, उनके दरवाजों पर सुनहरे और लाल अक्षरों में 'नया वर्ष मुबारक' और 'नया वर्ष शांतिमय हो,' लिखा हुआ था।

ह्सिआओ ने झुक कर अपने चाचा-चाची का अभिवादन किया। उन सबों ने ह्सिआओ मिंग और उसके माता-पिता को नये साल की शुभकामनाएं दीं। उसकी चाची ने एक बडा कटोरा भर कर लाल और सफेद रंग की गोल मिठाई दी जिसमें मेवे भरे हुए थे। उन्होंने बताया कि चीनी लोग नये साल के दिन यह खास मिठाई बनाते-खाते हैं। उसके गोल आकार का मतलब है कि परिवार मजबूत हो, और उसमें एकता रहे।

शेरों का नाच देखने जाने लगे तो ह्सिआओ की जेबें लाल पैकेटों और रुपयों से भर चुकी थीं। नाच अभी शुरू नहीं हुआ था लेकिन चाइनाटाउन की सड़कें लोगों से खचाखच भर चुकी थीं।

भीड़ के चारों ओर पटाखे छूट रहे थे। एक ऊंची इमारत की खिड़की से एक बांस बाहर निकला हुआ था। बांस के सिरे पर पटाखों की माला लटक रही थी। एक को जलाने पर सारे-के-सारे पटाख-पटाख जल उठते।

सब ओर धुआं, सब ओर चिनगारियां और धमाके!

अचानक ह्सिआओ मिंग ने नगाड़ों, मंजीरों और तुरही की आवाज सुनी। वह ताली बजा कर चीख उठा, "आहा! शेर का नाच! शेर का नाच!"

पिता ने छोटे मिंग को कंधों पर उठा लिया, जिससे वह अच्छी तरह नाच देख सके।

एक झबरा, भारी और सीधा-सा शेर आया। उसके पीछे एक छोटा शेर था। शेर की खाल पहने नाचने वालों के पांव मिंग को साफ दीख रहे थे। शेर संगीत के साथ झूम रहे थे। वे ऊपर-नीचे सिर हिलाते, जमीन पर लेटते और फिर सीधे खड़े हो जाते। संगीत खत्म हुआ तो उन्होंने झुक कर सबका अभिवादन किया और फिर कूदते हुए चले गए। तालियां गूंज उठीं।
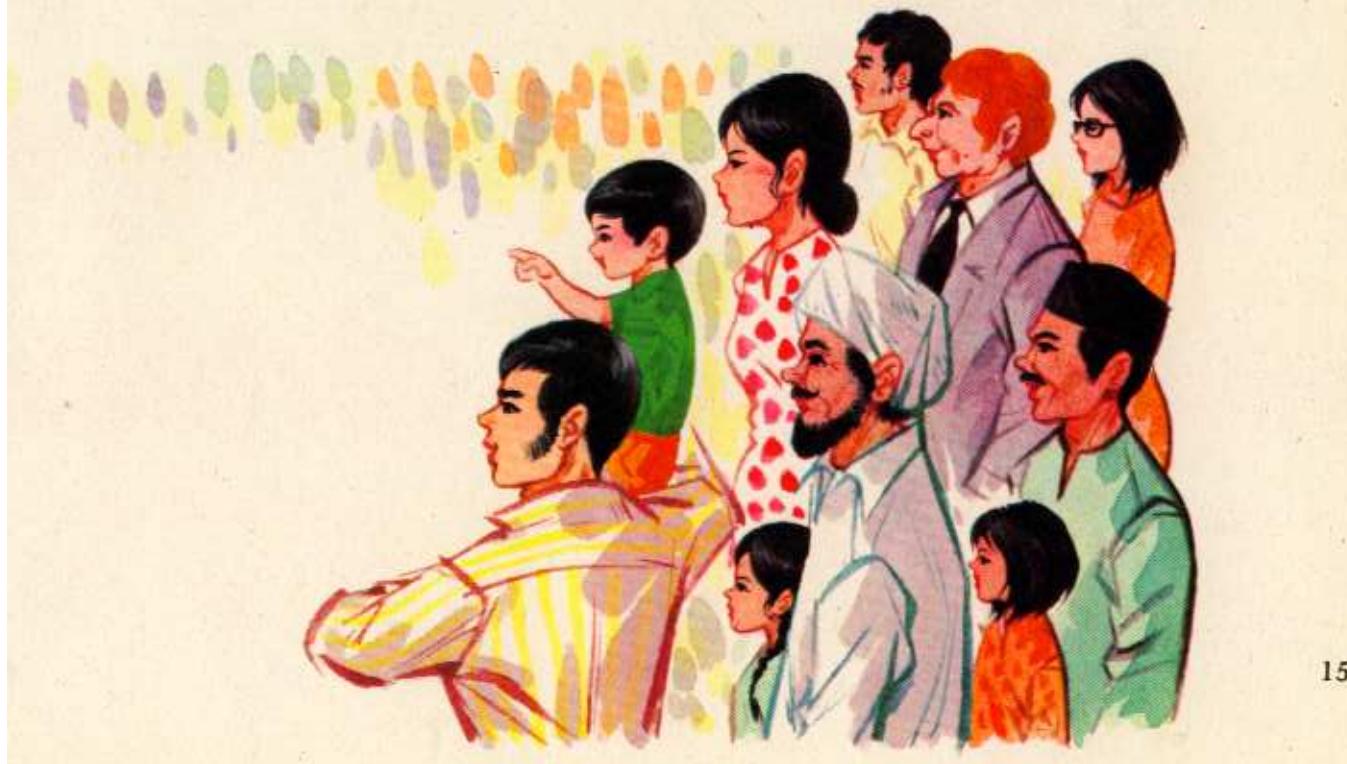
शेर का नाच देख कर सब बहुत खुश थे, क्योंकि चीनियों का विश्वास है कि ड्रेगन और फीनिक्स पक्षी की तरह शेर भी मंगलकारी होते हैं। सुख और संपत्ति लाते हैं।

जब ह्सिआओ मिंग और उसके माता-पिता शाम को घर लौटे तो मां ने नन्हे बालक को सुला दिया। रात बहुत हो चुकी थी। ह्सिआओ मिंग को नींद नहीं आ रही थी। वह शेरों के नाच, पटाखों, चाचा-चाचियों से मिले लाल पैकेटों और आज की तमाम मजेदार चीजों के बारे में सोच रहा था। काश! आज का दिन कभी न खत्म होता।

जब उसकी आंखें बंद होने लगीं तो वह बुदबुदाने लगा, "चीनी नया वर्ष फिर कब आएगा?"

अग्नि-उत्सव

नया साल आ रहा है! अब्बा ने मुझसे वायदा किया था कि कल नये जूते खरीदेंगे क्योंकि कल खास दिन है – साल का आखिरी बुधवार!

ईरान में यह साल का सबसे अच्छा दिन होता है। इस दिन हम आग की लपटों को फांदते हैं। हम बाजार से झाड़-झंखाड ले आते हैं। रात को उन्हें जला देते हैं और फिर अंधेरे में आग की चमकती, लपकती लपटों की कतारों को फांदते हैं।

अब्बा ने कहा था कि आखिरी बुधवार तक इंतजार करो। तभी नये साल के लिए नये जूते खरीदेंगे।

"उस दिन खरीदारी करना शुभ होता है," उन्होंने समझाया था।

लेकिन मुझमें इतना धीरज नहीं था कि तब तक इंतजार करता।

"अगर बाजार के सारे जूते बिक गए तो?" मैंने अधीर होकर पूछा। अब्बा ने मुसकरा कर कहा कि कुछ तो जरूर बचेंगे। नये साल पर हर एक को नये जूते पहनने होते हैं।

पिछले साल तो मैंने लगभग एक महीने पहले से ही नये साल के लिए नये जूते और मोजे ले रखे थे। मुझको याद है कि आखिरी बुधवार को मैंने पहनना चाहा था, पर अब्बा ने यह कह कर पहनने नहीं दिया कि वे तो नये साल के लिए हैं।

पिछले साल आखिरी बुधवार को कितना मजा आया था! मुझको याद है, अब्बा तड़के सवेरे मुझको बाजार ले गए थे झाड़ियां खरीदने!
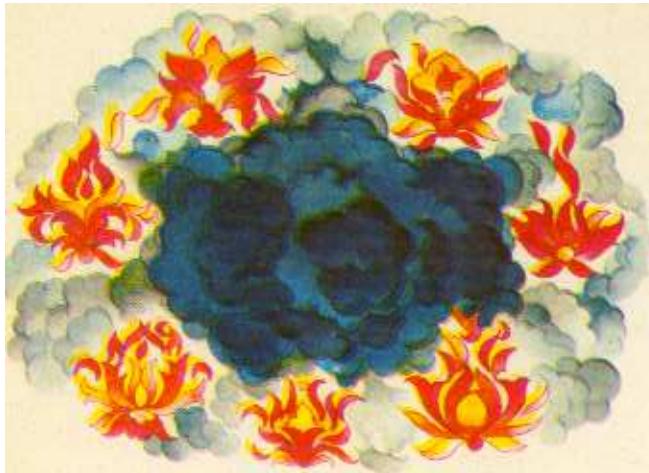
"सडक के उस ओर वाली दुकान से वहां ज्यादा सस्ती होंगी," उन्होंने कहा।

ये झाड़ियां बहुत, बहुत दूर ईरान के रेगिस्तानी इलाके से इकट्ठी की जाती हैं। शहर में बहुत महंगे दामों पर बेची जाती है। जैसे-जैसे आखिरी बुधवार निकट आता है, दाम बढ़ते जाते हैं।

अब्बा और मैं बाजार पहुंचे तो झाडियां बेचने वालों के सामने उनके अम्बार लगे थे। तरह-तरह की झाडियां थीं।

मैंने कुछ बडी झाडियां पसंद कीं, क्योंकि वे ज्यादा देर तक जलतीं।

अब्बा ने दाम पूछे तो चकरा गए! इतने महंगे! दूकानदार ने कहा, "ज्यादा नहीं मांग रहा हूं, साहब! साल में एक बार बेचता हूं, और देखिए, आपका नन्हा बेटा कितनी ललक से ताक रहा है इनको!"

मैं सचमुच ही बड़ी उत्सुकता से झाड़ियों की ओर देख रहा था। अब्बा ने महंगे दाम की बात भूल कर पैसे चुका दिए।

एक छोटी ट्रक पर झाडियां लाद कर हम घर आए। मैं रास्ते भर सिर्फ उन्हें रात में जलाने और उनको फांदने की बात ही सोचता रहा।

मैंने सोचा, 'ईरान के सारे बच्चे आज रात को यही करेंगे।' हम घर पहुंचे तो मेरी नजर मां पर नहीं पडी जो पहले से ही बाहर बाग में हमारे इंतजार में खडी थी।

"संभल कर। ऐसी जगह मत रखना जहां ये हवा में उड़ जाएं।" मां ने एक जगह दिखा दी जहां ऐसा कोई खतरा नहीं था।

मैंने देखा कि मां ने झाड़ियों को जलाने के लिए सूखी घास जमा कर रखी है। दिन चढ़ने लगा। स्कूल जाने का वक्त हो गया।

क्लास में भी मैं बैठा-बैठा झाड़ियों की बात ही सोचता रहा। कितना मजा आएगा!

आखिरी क्लास में अध्यापिका जी ने हमें सवाल नहीं दिए। बुधवार के त्योहार की ही बात करती रहीं। मैं उनका मुंह ताकता रहा। झाड़ियां जलाने की बात करते समय उनकी आंखें भी चमकने लगी थीं।

"हमारे पुरखे जो जोरोएस्ट्रियन कहलाते थे, अग्नि की पूजा करते थे।" उन्होंने बताया। "वह दो भगवान को मानते थे अच्छाई का भगवान और बुराई का भगवान। अग्नि को अच्छाई के भगवान ने बनाया जो हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करता है और दुनिया में सुख-शांति फैलाता है। लड़ाई, अकाल, बीमारियां — ये सब बुराई के भगवान के काम हैं।

"हमारे पुरखे, जोरोएस्ट्रियन, जिस मंदिर में पूजा करते थे, वह अग्नि-मंदिर कहलाता था। क्योंकि उसके अन्दर रात-दिन आग जलती रहती थी। लोग लाल-नारंगी रंगों की लपटों की पूजा करते थे और अपनी मनोकामना पूरी होने की दुआ मांगते थे। उनका विश्वास था कि अग्नि की नारंगी रंग की जीभें उनकी विनती को आकाश तक पहुंचा देंगी जहां अच्छाई का भगवान रहता है।"

मैं अध्यापिका की बताई बातें ही सोचता रहा। हां, आग हमारे लिए जरूरी है, अच्छी है। आग के बिना न तो जाड़ों में घर गरम रह सकेंगे और न गरम खाना मिलेगा। लेकिन एक और किस्म की आग भी होती है। अगर मैं रसोई में गैस का चूल्हा लापरवाही से जलाऊं तो वह फट जाएगा और सारी रसोई में आग लग जाएगी। उस किस्म की आग बुराई के भगवान की बनाई होती है।

उसी समय घंटी बजी। मैं उछल कर खड़ा हुआ, और बस्ता उठा कर सारे रास्ते दौड़ता हुआ घर तक पहुंचा।

अब्बा अभी तक घर नहीं आए थे, पर आते ही होंगे। उस खास बुधवार को वह हमेशा जरा जल्दी ही आ जाते हैं। उनके आते ही हम बाग में गए और झाड़ियों को एक कतार में लगाने लगे। दो झाड़ियों के बीच कूदने लायक काफी जगह रखी। अंधेरा होगया तो मैंने सावधानी से, लम्बी जलती लकड़ी से, सारी झाड़ियां जला दीं। एक-एक कर के सब जल उठीं, पीली, नारंगी और गुलाबी लपटें आकाश की ओर फेंकने लगीं।

अंधेरे में उनकी लपटें कितनी खूबसूरत लग रही थीं!

पहले मैं जलती झाड़ियों के ऊपर से कूदा। उसके बाद मां और फिर अब्बा। मैं जल्दी से परे हट गया, लेकिन मेरे पांव अब भी जल रहे थे। मैं आग से डरता नहीं था, फिर भी मैं सांस रोके रहा। पूरी कतार खत्म कर के मैं ताली बजा कर हंसने लगा।

मैंने पीछे मुड़ कर मां और अब्बा को देखा। सात बार हमने जलती झाड़ियों को फांदा। तब तक लपटें छोटी हो गई थीं, और लकड़ियां चटख नहीं रही थीं। थोड़ी देर तक जलती रहीं, फिर धीरे-धीरे बुझ गयीं। बाग एक बार फिर अंधेरे में डूब गया। लेकिन राख बटोरते हुए भी मैं गाता रहा। सारी राख एक कोने में जमा कर दी।

खाने के समय भी मैं जलती झाड़ियों के ऊपर से कूदने की बात ही करता रहा।

इस तरह मैंने पिछले साल यह त्योहार मनाया था।

अब मैं सोचता हूं, कब सुबह होगी जब अब्बा मुझे झाडियां खरीदने के लिए बाजार ले जाएंगे।

ओह! मैं अपने नये जूतों के बारे में तो भूल ही गया था। पिछले साल के त्योहार के सपनों में इस तरह खो गया था कि नये जूतों की मुझको फिक्र ही नहीं रही।

अब्बा नये जूते न भी खरीदें तो भी हम झाड़ियां तो जला ही सकते हैं और आग पर से कूद सकते हैं। वही बहुत है।

गुड़ियों का दिवस और लड़कों का दिवस

जापान में बसंत सब बच्चों का प्यारा मौसम होता है। बसंत में सारे पेड़ फिर से हरे-भरे हो जाते हैं और फूल खिल उठते हैं। जाड़ों में जो पक्षी दूसरे गरम इलाकों में चले गए थे, वे सब फिर वापस आ गए हैं।

लेकिन सबसे अच्छी बात तो यह है कि बसंत बच्चों के लिए दो त्योहार लाता है! एक तो मार्च में लड़कियों के लिए, जो गुड़ियों का दिन कहलाता है और दूसरा लड़कों के लिए मई में जो लड़कों का दिन कहलाता है

हर घर में, जहां बच्चे होते हैं, ये दोनों त्योहार जरूर मनाए जाते हैं, क्योंकि इन त्योहारों के ज़रिये माता-पिता कामना करते हैं कि उनकी बेटियां बड़ी होकर सुन्दर निकलें और बेटे बहादुर और निडर।

जानते हो,किस पक्षी को सबसे पहले बसंत के आने का पता चलता है ?

जापानी बुलबुल को। वह एक पेड़ पर से दूसरे पेड़ पर अपनी मधुर आवाज में गाती फुदकती रहती है, और बच्चों को पता चल जाता है कि बसंत करीब आ गया है।

बुलबुल के गाने से आलूबुखारे के पेड़ भी जाग उठते हैं और देखते ही देखते बाग में सारे आलूबुखारे के पेड़ सफेद या गुलाबी फूलों से भर उठते हैं। आड़ू के पेड़ भी बुलबुल का गाना सुनते हैं और गुलाबी फूल निकल आते हैं।

फिर जापान की सारी छोटी लड़कियां 'हिनमतसुरी' की तैयारियों में लग जाती हैं। 'गुड़ियों के दिवस' का यही नाम है जापानी में।

त्योहार मार्च की तीसरी तारीख को होता है। उससे कुछ हफ्ते पहले माताएं अपनी बेटियों को बढ़िया रेशमी और किमखाब के कपड़ों से सजी पन्द्रह छोटी-छोटी गुड़ियां देती हैं। उनमें एक राजकुमार होता है और एक राजकुमारी। सेविकाएं,

राज्यमंत्री, राजगायक और दरबारी भी होते हैं।

मां को इन सुन्दर गुड़ियों के संग्रह पर गर्व है क्योंकि ये वही गुड़ियां हैं जो उनकी मां ने उनको दी थीं, जब वह बहुत छोटी-सी थीं।

मां उन्हें लकड़ी के बक्से से निकालती हैं। उनके बालों और कपड़ों को झाड़ कर साफ करती हैं।

छ: खानों वाली खास खुली अलमारी पर इन गुडियों को सजाया जाएगा। ये खाने सीढ़ियों की तरह बने होते हैं पूरे त्योहार के दौरान ये सजी रहेंगी। पहले खानों को चटख लाल रंग के कपडे से ढकना होगा ताकि गुडियां खिल उठें।

खाने तैयार हो जाते हैं तो लडकियां उन पर गुडियों को सजा देती हैं।

राजकुमार और राजकुमारी सब से ऊपरवाले खाने पर। उनके पीछे एक छोटा-सा सुनहरा पर्दा होता है। दोंनों ओर छोटी लालटेनें होती हैं।

दूसरे खाने में सेविकाएं होती हैं, उनकी सेवा के लिए। उसके बाद राजदरबार के पांच संगीतज्ञ, फिर दो राज्यमंत्री और आखिर में तीन दरबारी। दरबारियों के दोनों ओर लगाने के लिए मां के पास नारंगी और चेरी के नन्हें पेड़ हैं। सबसे नीचे वाले खाने के सिवाय बाकी सब तैयार है। मां लकडी का एक और बक्सा खोलकर नन्हें-नन्हें फर्नीचर निकालती है।

गुडियों की जरूरत की सारी चीजें हैं— दराजोंवाली अलमारी जिसमें कपड़े भी रखे हैं, राजकुमारी के लिए श्रृंगारमेज, शीशे, श्रृंगार की चीजें, प्लेटें, कटोरे, सिलाई का डिब्बा, नन्हीं-नन्हीं किताबों से भरी अलमारी, और शाही जोडे की सैर के लिए बग्घी।

लड़कियां अपनी शानदार सजावट से बहुत खुश हैं। लेकिन मां कहती है कि तीसरी मार्च से पहले त्योहार शुरू नहीं हो सकता। उस दिन गुडियों के लिए खान-पान की चीजों के साथ चाय-पार्टी होगी।

जब वह दिन आता है, मां एक फूलदान में आडू के गुलाबी फूल सजा देती है और अलमारी की बगल में रख देती है। तब आते हैं खाने के लिए पकवान: चावल, रंग-बिरंगी मिठाइयां, सफेद केक और दूधिया शराब भी। दोपहर को लडकियां गुडियों के साथ खूब मौज करती हैं।

वे अपनी रोज देखनेवाली गुड़ियों को भी टी-पार्टी में ले आती हैं। उनकी यह कितनी बढ़िया पार्टी है! वे उनको गाना सुनाती हैं, उनके साथ खेलती हैं, खाती-पीती हैं।

जब अंधेरा होने लगता है, मां उनसे दोनों लालटेनें जलाने को कहती है, जो सबसे ऊपरवाले खाने पर रखीं हैं। गुड़ियों का दिवस साल में एक ही बार आता है, इसलिए लड़कियों को थोड़ी देर जागने दिया जाता है।
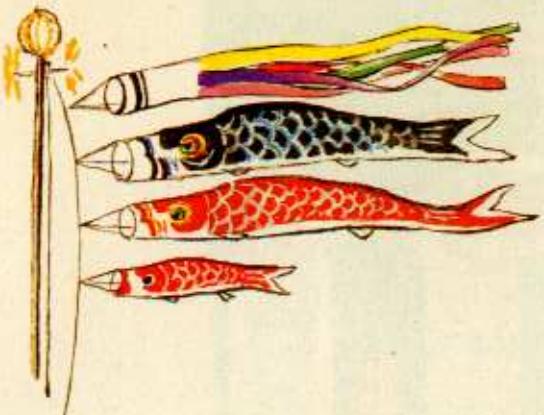
इस त्योहार में घर के लड़के कोई हिस्सा नहीं लेते। लड़कों का त्योहार पांच मई को होता है जब पेड़ों पर पत्तियां चटख हरी हो जाती हैं और धरती नरम हरी घास से ढक जाती है।

खेतों में जौ के पौधे तेज़ी से बढ़ रहे हैं, और आकाश सारा दिन साफ नीला रहता है। मई में धूप तेज हो जाती है और लड़के घर से बाहर खेल सकते हैं।

त्योहार के एक महीने पहले पिता बाग में लम्बा बांस गाड़ देता है। बांस के ऊपरी सिरे पर एक चक्र बांध देता है जो हवा में घूमते हुए चर्र-मर्र की आवाज करता है। चक्र के नीचे रस्सी की पुली बांध देता है। इसके सहारे मछलियों की शक्ल के झंडों को ऊपर चढ़ाया जाएगा। ये झंडे लड़कों के त्योहार के प्रतीक हैं और पूरे जापान में देखे जा सकते हैं।

मछलियोंवाले झंडे पूरे साल सहेज कर अंदर रखे हुए थे। लड़के उन्हें निकालने में व्यस्त हैं। ये झंडे मजबूत कपड़े के बने होते हैं। ये मोजों की शक्ल के होते हैं जिन पर चटख रंगों में मछली चित्रित होती है। ये छोटे-बड़े अलग-अलग आकार के होते हैं। सबसे बड़ा झंडा सबसे ऊपर के लिए होता है, और छोटे झंडे उसके नीचे लगाए जाते हैं।

लड़के बांस पर झंडे बांधने के लिए बाहर निकल आए हैं।

पहले सबसे बड़ा काला झंडा बांधा जाता है, फिर लाल, फिर सबसे छोटा लाल वाला। कभी-कभी एक बांस पर छः-सात झंडे तक लगे होते हैं।

पुराने जमाने में परिवार में जितने लड़के होते थे उतने ही झंडे लगाए जाते थे, और उतनी ही गुड़ियां दी जाती थीं।

ये वही झंडे हैं जो दादाजी ने पिताजी को दिए थे।

जब सारे झंडे लग गए तो लड़के अपनी पूरी ताकत से रस्सी को खींचने लगे। पिताजी ने भी मदद की।

झंडे ऊपर उठते गए। लड़के भरसक रस्सी को खींचते गए। अचानक वे खुशी से चीख उठे।

सबसे बड़ा काला झंडा बांस के सिरे तक पहुंच गया, और सारी मछलियां हवा में लहराने और फड़फड़ाने लगीं। उनमें हवा भर गई तो ऐसा लग रहा था कि वे जीवित मछलियां हैं और तैरते हुए अपनी दुम पानी पर पटक रही हैं।

लड़के बड़े गर्व से खंभों पर उड़ती लहराती मछलियों को देख रहे थे। ऊपर लगा चक्र मजे में चरमराता हुआ घूम रहा था। साफ नीले आकाश के नीचे रंग-बिरंगे झंडे कितने सुन्दर लग रहे थे!

घर के अन्दर बैठक-कमरे के एक बड़े ताक में पिताजी लड़कों के त्योहार की खास सजावट कर रहे थे।

ताक के दोनों ओर कागज की लालटेनें टांगी गयीं जिन पर परिवार का चिन्ह अंकित था।

ताक में बने खाने में तीर, धनुष, भाले, कवच और लड़ाई का घोड़ा सजाया गया। ये सारी वही चीजें थीं जिनका इस्तेमाल पुराने जमाने में योद्धा किया करते थे। सबसे नीचे वाले खाने में योद्धाओं की नन्हीं-नन्हीं मूर्त्तियां थीं जो कभी लड़ाई में मारे गए थे।

लड़कों ने कामना की कि वे भी उन सैनिकों की तरह बहादुर और निडर बनें।

उस दिन लड़कों की खास दावत होती है— देवदार के पत्ते में लिपटे हुए मीठे चावल के केक, चिपचिपे, चावल की बनी गोल मिठाई जो बांस के पत्तों में लिपटी हुई होती है।

जब भी वे घर के बाहर बांस के खंभे के ऊपर लहराती हुई मछलियों वाले झंडों या घर के अन्दर की गई सजावट को देखते हैं तो उनके दिल गर्व से भर उठते हैं।
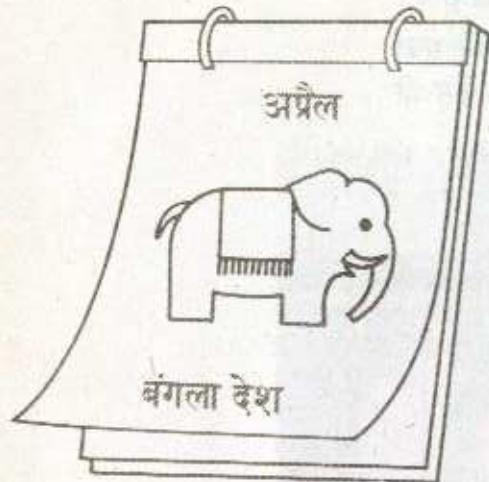
बंगाली नव वर्ष

मीनू के कमरे की खुली खिड़की से रोशनी की किरणें अन्दर आ रही थीं। सुहानी धूप ने आंखों को गरमाया तो मीनू जाग उठी और चारों ओर नजर दौड़ा कर अपने भाई मोण्टू को खोजने लगी जो उसी कमरे में उसके साथ रहता है।

लेकिन मोण्टू तो अपने बिस्तर में है नहीं! आखिर गया कहां? अजीब बात है!

मीनू खुली खिड़की के रास्ते आती कोयल की आवाज को सुन रही है। वह अपना गीत दोहराती रहती है। क्या कोयल उसको किसी चीज की याद दिला रही है जो वह भूल गई है?

"अरे, आज तो नये साल का दिन है!" मीनू बुदबुदाई। वैशाख का पहला दिन! हिन्दू कैलेण्डर का पहला दिन, जो अप्रैल में आता है।

मीनू कैसे भूल सकती है? आज तो देश भर में सारे स्कूलों में छुट्टी है। कोई भी काम पर नहीं जाएगा। मीनू के पिता भी नहीं जाएंगे। कितना प्यारा दिन है!

मीनू जल्दी-जल्दी बिस्तर से निकल कर मां के कमरे में जाती है।

"बड़ी देर से उठी, मीनू!" उसकी मां ने कहा।

मां की बात खत्म होने के पहले ही मीनू बाग में पहुंच गई। अपने मित्रों के साथ मोण्टू वहां पहले से ही मालाएं बनाने के लिए फूल चुन रहा था। ये मालाएं लड़कियां नये साल के दिन गले में और कलाइयों पर पहनती हैं।

'कितने सुन्दर फूल हुए हैं इस साल,' मीनू ने सोचा, और मोण्टू और उसके दोस्तों के साथ फूल चुनने लगी। लाल कनेर, सफेद डेज़ी, गुलाबी रंग के गुलाब, बैंगनी गुड़हर और पीले गेंदे के फूल।

पिछले साल नये साल पर मीनू और मोण्टू अपने नाना-नानी के गांववाले घर में थे। कितना मज़ा आया था! किसानों की स्त्रियों ने कितनी सुन्दर रंगोली की थी दरवाज़ों के बाहर! स्वादिष्ट पीठे भी

याद हैं उसको। कुछ की शक्ल फूल की तरह थी, कुछ की सिंघाडों की तरह तिकोनी। किसी में खोया भरा था तो किसी में नारियल। और उनके नाम इतने सुन्दर थे कि मीनू ने उन्हें अपनी कापी में लिख लिया था ताकि भूल न जाए।

जब बच्चों ने सारे फूल चुन लिए, और चुनने को बाकी नहीं रहा, तो मोण्टू ने लड़कों से कहा कि सब-के-सब मेरे पीछे लाइन में खड़े हो जाओ। फिर वह मार्च करता हुआ, नये वर्ष के स्वागत का गीत गाता हुआ आगे-आगे चला और लड़के उसके पीछे। सारी सड़कों पर गीत गाते हुए उन्होंने प्रभात फेरी की। जो उस छोटे-से जुलूस को देखता, खुशी से मुसकरा देता।

गाना खत्म होने के बाद मीनू और मोण्टू मालाएं बनाने के लिए घर वापस आ गए।

वे माला बना रहे थे तो नये साल की बधाई देने के लिए मेहमानों का आना शुरू हो गया। जो आता, मिठाई और फलों की सौगात लेकर आता।

बच्चे बाहर जाकर दूकानें देखना चाहते थे। नये साल का पहला दिन व्यापारियों के लिए विशेष दिन होता है। बीते वर्ष का खाता बन्द किया जाता है। दूकानों को फूल-पत्तों और कागज की झंडियों से सजाया जाता है। दूकानों पर आनेवाले बच्चों को मिठाई दी जाती है।

सारे मेहमान जा चुके तो मां ने मीनू को नये कपड़े पहनाए – लाल और पीले कपड़े क्योंकि ये बसंत के रंग हैं।

वे थियेटर जा रहे थे नये साल का विशेष प्रोग्राम देखने। मोण्टू फुटबाल का मैच देखने जाना चाहता था, और मीनू नये वर्ष के संगीत कार्यक्रम के लिए जाना चाहती थी। आखिर मां ने नाच देखने का फैसला किया।

नाच की कहानी प्रसिद्ध कथा-संग्रह 'ठाकुरमांर झोली' से ली गई थी।

मीनू की मां को विश्वास था कि दोनों बच्चे इस प्रोग्राम का आनन्द लेंगे।

उनके पिता पहले से ही थियेटर के सामने उनका इंतजार कर रहे थे। सारी इमारत रंगीन बत्तियों से जगमग कर रही थी। अन्दर हॉल फूलों से सजाया गया था। स्टेज पर भी फूल थे। मीनू को कई सहेलियां मिलीं। सभी मालाएं पहने थीं। पिताजी कहां है? उसने चारों ओर देखा। वह रहे पिताजी।

पिताजी ने सफेद धोती और सफेद रेशमी कुरता पहन रखा था। सबके पिताओं ने ऐसे ही कपड़े पहने थे। सभी की माताओं ने लाल और पीले कपड़े पहन रखे थे। बत्तियां बुझ गईं और नाच शुरू हुआ। मीनू और मोण्टू बत्तियों की जगमग, चटख रंगों की बहार और नाच में इस तरह खो गए कि दो घण्टे पलक मारते गुजर गए।

नाच के बाद और भी कुछ था जो उनकी उत्सुकता जगाए था। नये साल का मेला–साल का सबसे बडा उत्सव।

"जल्दी चलो, जल्दी ···" बच्चे अपने मां-बाप से कह रहे थे।

भीड में रास्ता बनाते हुए वे निकले और नदी-किनारे की ओर चले जहां पर हर साल मेला लगता था।
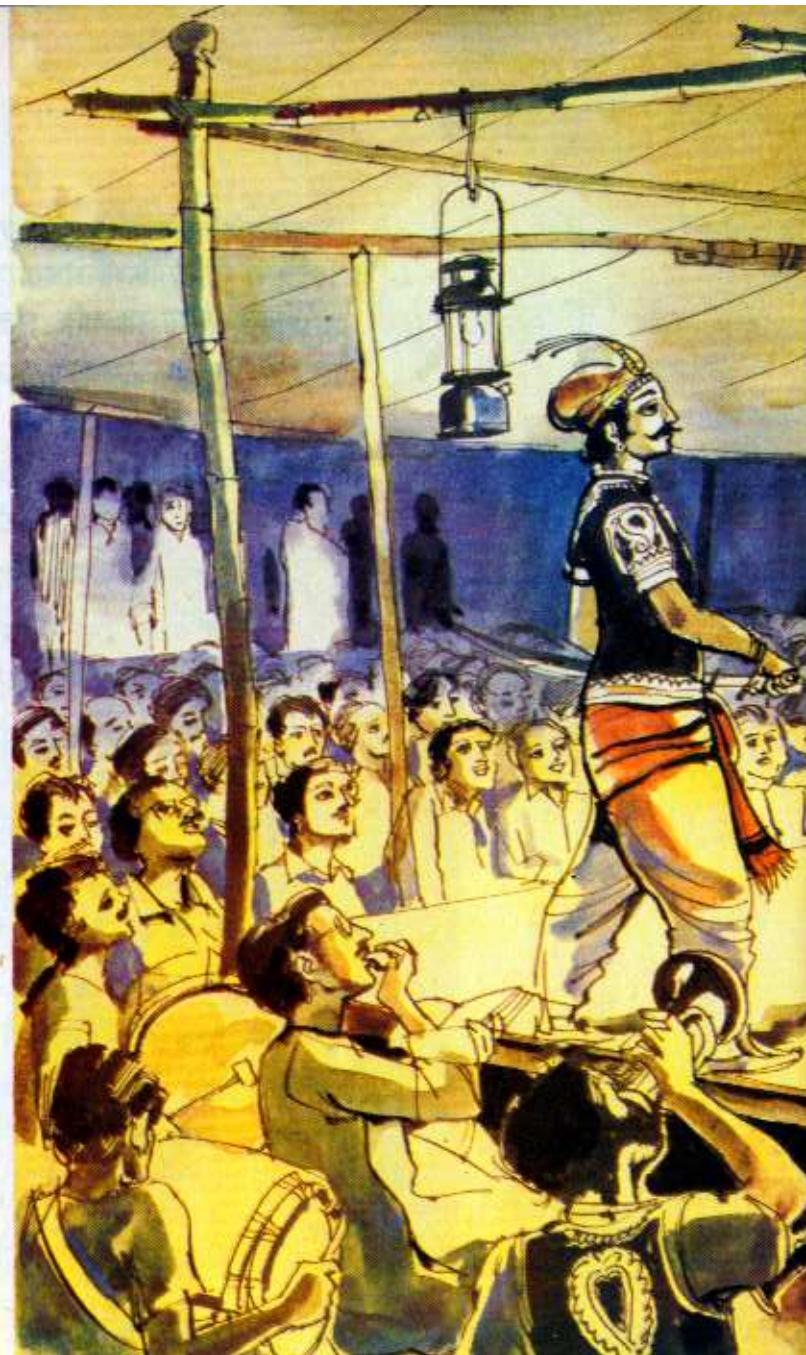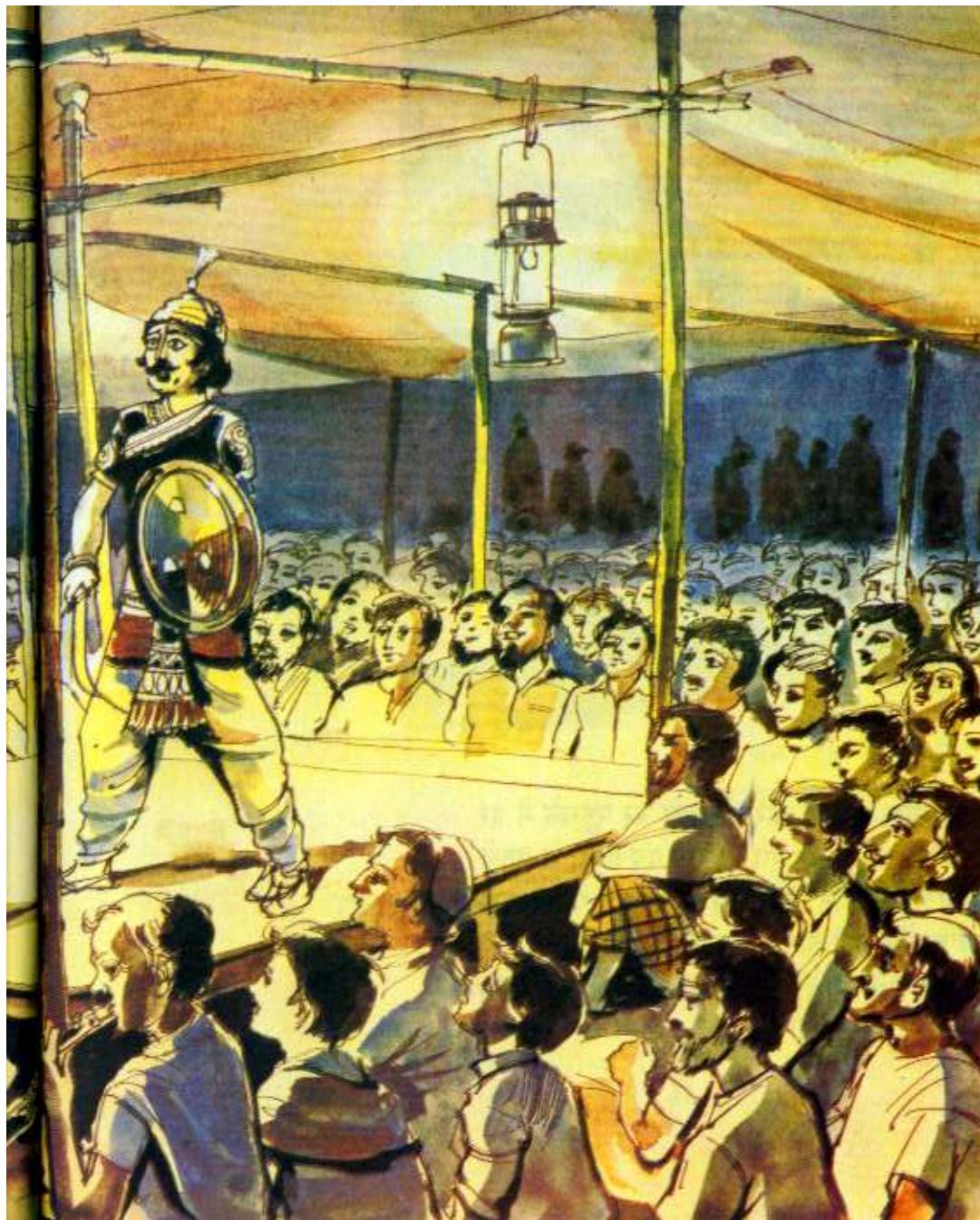
नदी के पास पहुंचने के पहले से ही उन्हें भीड़ का शोर-गुल सुनायी दे रहा था। मेले में पहुंचकर तो मीनू आश्चर्य से चीख उठी।

कितने सारे खिलौने और जानवर थे! कितने सारे फल!

बड़े घूमनेवाले चक्कर के पास पहुंचे तो बच्चे उसपर बैठना चाहते थे। अपने घोड़ों पर सवार वे ऊपर-नीचे और गोल-गोल चक्कर लगा रहे थे। उनके साथ सारी दुनिया घूम रही थी। कितना मजा आ रहा था!

जब वे जादूगर की दुकान के सामने से निकले तो उसका खेल देखने रुक गए।

जादूगर ने एक औरत को एक शीशे के बक्स में बंद कर दिया। अब वह उसका सिर काट डालेगा। एक, दो, तीन! उसका सिर उड गया।

मीनू और मोण्टू डर और आश्चर्य से देखते रहे। फिर जादूगर ने एक बड़ा काला कपडा शीशे के बक्स के ऊपर डाल दिया और कुछ बुदबुदाया। औरत का सिर जुड गया था। वह पूरी-की-पूरी सामने खड़ी थी।

जब वे मेले से चले तो आधी रात हो चुकी थी। भीड़-भाड़ के कारण उनको घर पहुंचने में देर लगी घर पहुंचे तो वे इस कदर थक गए थे कि सीधे बिस्तर में घुस गए। आखें बंद करने से पहले मीनू ने खुली खिड़की से तारों-भरे आकाश को देखा। तूफान के आसार नजर आ रहे थे। वैशाख तूफानों का महीना है। लेकिन लगता है। कि बड़ा तूफान नहीं होगा। घबराने की बात नहीं है।

मीनू ने सोचा, 'चलो नये साल के स्नान के बाद सारा देश स्वच्छ हो जाएगा।' और सोचते-सोचते ही वह सो गई।

जल पर्व

बरमा में सभी को पानी से प्रेम होता है। जब इतनी मूसलाधार वर्षा होती है कि सड़क के पार भी न देख सको तो हमको बड़ा अच्छा लगता है।

जब वर्षा खत्म हो जाती है तो सारे पेड़-पौधे चटख हरे हो जाते हैं और डालियां और पत्ते बड़े-बड़े-से हो जाते हैं। वह तो आंखों से देख कर ही विश्वास किया जा सकता है कि किस तरह आनन -फानन वे बढ़ जाते हैं।

कुछ लोग तो कहते हैं कि ध्यान से सुनो तो पौधों के बढ़ने की ध्वनि सुनी जा सकती है।

हमको पानी से इसलिए भी प्रेम है, क्योंकि वह हमारी रोज की जिंदगी के लिए बहुत जरूरी है। छोटे-छोटे बच्चे भी बता देंगे कि हमको पानी की जरूरत होती है नहाने, कपड़े धोने और खाना पकाने के लिए।

तुम जानते हो कि जो चावल हम खाते हैं वह पानी में पैदा होता है। धान रोपते समय खेत पानी से भरा न हो तो, वह बढ़ेगा ही नहीं। तब सब के खाने के लिए काफी चावल नहीं मिलेगा।

क्योंकि बरमा के लोगों के लिए पानी इतना जरूरी है, इसलिए हमारा सबसे बड़ा त्योहार पानी से संबंधित है।इस त्योहार को 'थिंगयान' कहते हैं। यह बरमी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है, 'बदलना' और 'थिंगयान' में होता भी यही है— पुराना साल जाता है और नया साल आता है।

जब लाल लकड़ी के पेड़ों में पीले फूल निकलते हैं तो हम जान जाते हैं कि थिंगयान निकट है। और जब सड़कों पर ओजी ढोलचियों की ढोलकों की थाप सुनाई देती है तो हम जान लेते हैं कि थिंगयान आ पहुंचा।

ढोलची मन्दिर जाते हैं मूर्त्तियों को वार्षिक स्नान कराने। हम अपने माता-पिता के साथ और भाई-बहनों के साथ बाहर निकल आते हैं और ढोलचियों के पीछे-पीछे मन्दिर तक जाते हैं— सारे रास्ते कूदते, नाचते।

बरमा में अप्रैल सबसे गर्म महीना होता है। बरसात के शुरू होने के पहले तो ऐसा लगता है मानो भट्ठी में रह रहे हों। जब बहुत गर्मी लगती है तो पानी का खयाल आता है। शीतल पानी की बूंदें पीठ पर टपकती हुई। सारे शरीर पर ठंडा पानी डालने से कितना सुख मिलेगा।

और यही होता है थिंगयान के शुरू में। एक पूरा दिन तो हम एक दूसरे पर बाल्टी भर-भर पानी डालते रहते हैं— अजनबियों पर भी। आपको शायद यह रिवाज अजीब लगता होगा, इसलिए मैं इसके बारे में थोड़ा और बता दूं क्योंकि हमें सचमुच बहुत आनन्द आता है।

हमारे लिए पानी का अर्थ है अच्छी चीजें, अच्छे विचार। पानी से हम पिछले वर्ष की सारी बुराई को धो डालते हैं और पवित्र होकर नया साल आरम्भ करते हैं। जब मैं अपने मित्र पर पानी डालता हूं तो उसको भरसक भिगोने की कोशिश करता हूं अपनी शुभकामनाएं जताने के लिए।

हर बार पानी फेंकते हुए मैं कहता हूं, "शीतल पानी में भीग जाओ। ईश्वर करे, नया साल इस पानी की तरह ही सुख देनेवाला हो।"

राजधानी रंगून में, जहां मैं रहता हूं। हम खास तौर से भाग्यशाली हैं, क्योंकि थिंगयान में हमें खूब पानी मिलता है। इतना ज्यादा पानी फेंका जाता है इस शहर में कि थिंगयान को 'महाप्रलय' कहते हैं।
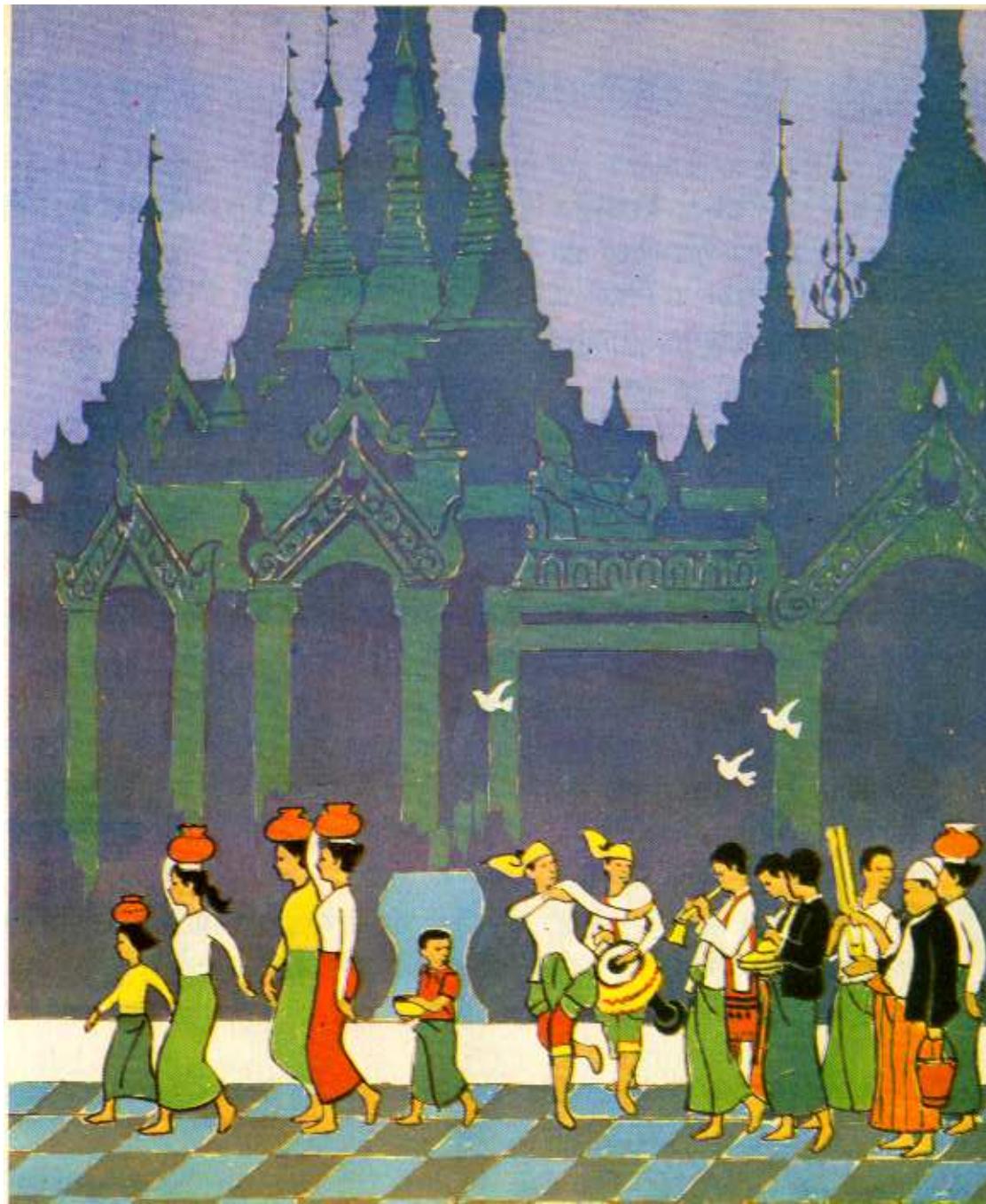
सडकें खूब सजाई जाती हैं और लोग बडी-बडी सजी गाडियों से बाल्टी भर-भर पानी सड़क चलनेवालों पर फेंकते हैं। पम्प खोल दिए जाते हैं, फव्वारों को हर दिशा में घुमा दिया जाता है।

शहर में इतना गुल-गपाडा और रौनक है कि घर के अन्दर कोई नहीं ठहरता। अगर आप थिंगयान के दिन सडक पर निकलें तो यह आशा न करें कि आप सूखे कपडों में घर लौटेंगे! और हां, अपने अच्छे कपड़े मत पहनिएगा।

मध्य बरमा में जहां बरसात अभी शुरू नहीं हुई, धरती अभी सूखी है, इस कारण पानी को बरतने में किफायत करनी पडती है। वहां रहनेवाले बच्चों के लिए मुझको अफसोस होता है क्योंकि वे चांदी के कटोरों में पानी भर कर टहनियों से ही एक-दूसरे पर पानी छिडक पाते हैं। बस।

जैसे हम रंगून में भीग उठते हैं वैसे ही वहां कोई नहीं भीगता। लेकिन त्योहार के बारे में वे इतनी अच्छी तरह जानते हैं कि बनते ऐसे हैं मानो बाल्टी भर पानी उन पर उंडेल दिया गया हो।

अगर आप कुछ बूंद पानी किसी लडकी पर छिडकें तो वह आश्चर्य से चीखेगी, "ओ मां, मै तो तर हो गई!" चाहे वह बिल्कुल ही न भीगी हो!

अराकान के इलाकों में पानी की कमी को पूरा करने के लिए लड़के-लड़कियां एक और खेल खेलते हैं। लकडी की छोटी नाव के दोनों ओर वे कतार में खड़े हो जाते हैं जिसे ऊपर तक पानी से भर देते हैं। एक लड़की चांदी का कटोरा नाव में भरे पानी में डुबोती है। फिर कटोरे का पानी किसी लड़के पर उंडेल देती है। फिर दूसरी लडकी यही दुहराती है, और इस तरह बारी-बारी सारी लड़कियां करती हैं।

फिर लड़कों की बारी आती है। पहले वे लड़कियों से उनकी नये साल की शुभकामनाएं लौटाने की अनुमति मांगते हैं। लडकियां हां कहती हैं, और जल्दी ही दोनों दल भीग उठते हैं।

इस मौसम में ठंड लगने का तो डर होता नहीं। सब गाते-नाचते हुए मौज उड़ाते हैं।
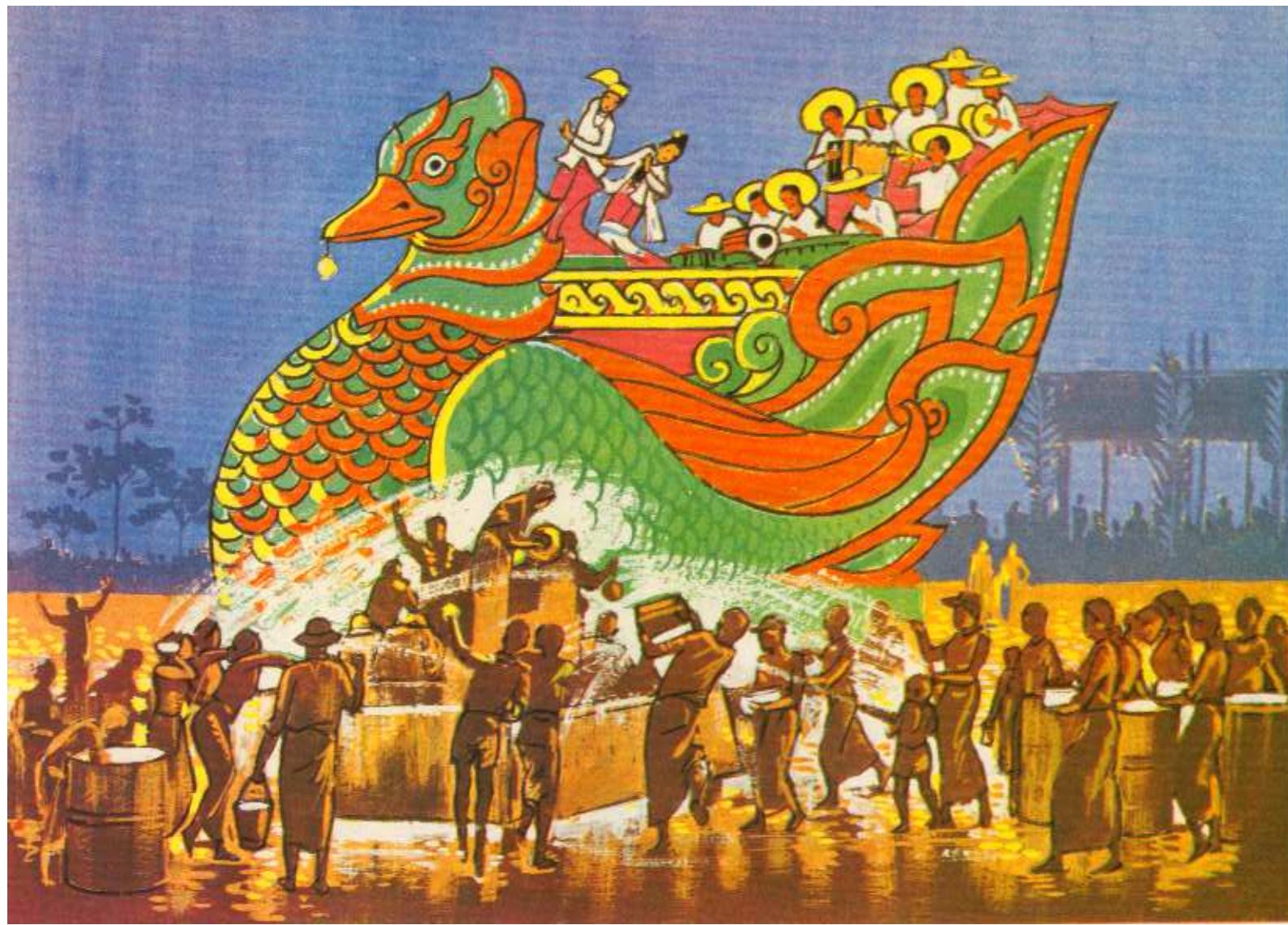
मैं मध्य बरमा के मांडले नगर को कभी नहीं गया जहां इस समय बरसात का पानी कम होता है। कहते हैं, वहां बच्चे और ही ढंग से थिंगयान मनाते हैं। सारा दिन वे गाने की प्रतियोगिता और तरह-तरह के लोकनृत्य सुनते-देखते हैं। शाम को जब नाच-गाने का कार्यक्रम खत्म हो जाता है, मुख्य सड़क पर सजी हुई झांकियां निकलती हैं। काश! मैं मांडले जाकर यह खूबसूरत नज़ारा देख सकता!

इस तरह थिंगयान का पहला दिन खत्म हो जाता है। दूसरी सुबह हम मन्दिरों में, जो नये सिरे से धोए गए हैं, प्रार्थना करने जाते हैं। आज रंगून के लोग कल की अपेक्षा बिल्कुल अलग लग रहे हैं। क्योंकि मन्दिर जाते समय वे गंभीर मुद्रा में हैं। हम गरीबों और जरूरतमंदों को पैसे दान करते हैं। कभी-कभी इस समय लड़कों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी जाती है। फिर हम सबके लिए स्वास्थ्य और सुख की कामना करते हैं। थिंगयान में काफी पानी मिले या नहीं, उसकी भावना ही मुख्य है!
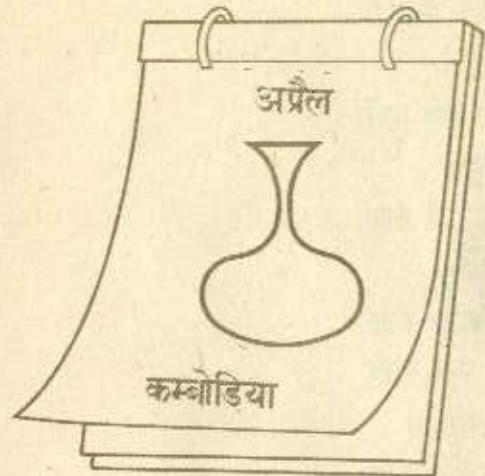
अंगकोर में नया वर्ष

ख़मेर गणतंत्र में नया वर्ष हम १२ अप्रैल को मनाते हैं, और तीन-चार दिन तक सारे देश में इतने सारे खेल खेले जाते हैं कि उनकी गिनती करना संभव नहीं।

बायीं ओर पेड़ों के उस झुरमुट के बीच आप बच्चे खेलते हुए देख सकते हैं। जरूर कोई मजेदार खेल है क्योंकि लोग उसी ओर जा रहे हैं। आइए, हम भी चलें।

लड़कों की कतार के सामने लड़कियों की कतार खड़ी है। एक लडकी कपड़े की गेंद लड़कों की ओर फेंकती है। लड़का गेंद को पकड़ने की कोशिश करता है। सबसे लम्बा लड़का जो है, वह गेंद पकड़ लेता है। वह गेंद को पकडे-पकडे लडकियों की ओर भागता है, एक लडकी के पीछे खड़ा हो जाता है, और गेंद से उसको मारता है।

लड़की न हिलती-डुलती है न कुछ कहती है। अब उसकी बारी है।

लडका उसके पैरों के पास गेंद को छोड़ कर अपने दल में वापस चला जाता है।

अब लड़की गेंद उठा कर दौड़ती हुई लडकों की तरफ आती है और अपने चुने हुए लड़के के पीछे खड़ी होकर उसकी पीठ पर जोर से गेंद मारती है। दर्शक ताली बजाते हैं।

खेल दोबारा शुरू होता है। इस बार लड़के गेंद को हवा में उछालते हैं और लड़कियां उछलती हैं उसको पकड़ने के लिए।

दर्शक लोग रह-रह कर ताली बजाते हैं और उनको बढ़ावा देते हैं। एक युवक को जो खिलाड़ियों के बहुत पास खड़ा था, गेंद जोर से पीछे लगी। वह मुड़कर देखता है, लेकिन तब तक लड़की गेंद को उसके पैरों के पास छोड़ भाग कर अपनी लाइन में खडी हो गई थी। युवक गेंद को उठाता है। भीड़ की नजर उस पर है। वह शरमाता-शरमाता लड़कियों के दल की ओर जाता है। वह जानता नहीं कि कितनी जोर से मारना चाहिए, इसलिए हल्की मार से ही लडकी का पिंड छूट जाता है।

हंसते-हंसते दर्शकों की आंखों में आंसू आ जाते हैं। वे कहते हैं, "इतनी आसानी से लड़की को नहीं छोड देना चाहिए था।"

ये खिलाडी चले जाते हैं तो नये आ जाते हैं। जब सूरज डूब जाता है और रोशनी चली जाती है तभी खिलाडी वापस घर लौटते है।

मैं आपको यह बता दूं कि इस खेल में खास बात क्या है। एक तो यह सिर्फ नये साल के दिन खेला जाता है। हमारी राजधानी नोम-पेन में नहीं, बल्कि अंगकोर के पुराने शहर में।

राजधानी तो नये साल पर लगभग वीरान हो जाती है क्योंकि सारे स्कूल और दफ्तर बंद हो जाते हैं, और सभी अप्रैल की गर्मी से बच कर भागना चाहते हैं।

हजारों अन्य परिवारों की तरह नोम-पेन छोड़ कर हम भी नये साल के दिन अंगकोर में खेले जाने वाले खेलों को देखने चले गए। वह हमारे राजाओं का शहर था और एक हजार वर्ष से ये खेल वहां खेले जाते रहे हैं।

अंगकोर जाते हुए हम जिन घरों से गुजरे, उन पर लाल और नीले झंडे लगे थे। हम एक मन्दिर में रुके जिसका द्वार फूलों और लताओं से सजाया गया था। अन्दर लकडी के मंडप के नीचे बैठे गेरुए कपड़े पहने भिक्षु लोग आनेवालों से बातें कर रहे थे।

मंदिर में हम रुके थे बालू के टीले बनाने के लिए, जो हमारे बौद्ध धर्म के अनुसार नये वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण घटना होती है। बालू के ये टीले एक तरह की पूजा है।

इस समय मन्दिर जितने साफ और सुन्दर होते हैं, उतने और कभी नहीं, क्योंकि मूर्त्तियों को उनका वार्षिक स्नान दिया जाता है इस आशा से कि वर्षा जल्दी होगी।

हम बेकांग के खंडहरों तक पहुंचे तो वहां कोई दूसरा खेल चालू था। मेरे मां-बाप खंडहरों की सैर कर रहे थे तो मैं खेल देख रहा था। ठंडी हवा चल रही थी। बडे घने पेड़ों की छांव में मेरे मां-बाप कब वहां आकर खडे हो गए, मैंने देखा ही नहीं।

दूसरे दिन हम एक और प्राचीन नगर लोलेइ की ओर चले, जो बहुत दूर नहीं था।

नये पैगोडा के अलावा मैंने वहां लड़कों को एक और खेल खेलते देखा। मैं उनके पास चला गया।

नये साल का यह एक और खेल है जिसमें खिलाड़ियों को दो दलों में बांट दिया जाता है। देखना यह होता है कि कौन-सा दल टोकरी में अधिक लाल बीज फेंकता है।

वे झुक कर, शरीर को मोड़ कर, जी-जान से कोशिश कर के निशाना साध रहे हैं। लेकिन अभी वे इतने कुशल नहीं हुए हैं जितने बड़े पुरुष और स्त्रियां जो वहीं पास ही अपना खेल अलग खेल रहे हैं। उनको अनुभव है और वे जानते हैं कि बीजों को किस तरह टोकरी में ठीक से डाला जा सकता है।

लेकिन मुझको तो रस्साकशी देखने में मजा आता है। इस खेल को तो आप जानते ही होंगे। फर्क इतना है कि हमारे देश में रस्सी की जगह सांप होता है। सच्चा सांप नहीं, रस्सियों को गूंथ कर बनाया गया सांप।

सांप हमारे पुराणों में देवता माना गया है। अगर आपने कभी हमारे पुराने नगर अंगकोर थोम गए हैं, तो आपने शहर के सारे मुख्य द्वारों पर पत्थर में खुदा हुआ सांप देखा होगा।

अच्छा, अब खिलाड़ियों की ओर चलें।

इस समय स्त्रियां और पुरुष अपने-अपने कैप्टन चुनने में लगे हैं। खूब शोर-गुल हो रहा है।

आखिर नारंगी रंग के कपड़ोंवाली स्त्री और नीले कपड़ेवाला पुरुष चुना गया।

सांप को जमीन पर लम्बा लिटा दिया जाता है और दोनों दल अपनी-अपनी जगह खड़े हो

जाते हैं। रेफ्री मुंह में सीटी दबाए तैयार है। ज्योंही दोनों टीमें तैयार हो जाएंगी, खेल शुरू हो जाएगा। ये लो! दोनों दलों के लोग पूरा जोर लगा रहे हैं। उनके चेहरे लाल हो गए हैं। बड़ी मेहनत कर रहे हैं। दर्शक ताली बजाते हैं। आवाजें कसते हैं। सांप कभी आगे बढ़ता है तो कभी पीछे सरकता है।

फिर तालियों की गड़गड़ाहट! लगता है औरतें ज्यादा जोर लगा रही हैं। सांप ऊपर उठ गया। 'खींचो! खींचो!' भीड़ औरतों का हौसला बढ़ाती है। अचानक बड़े जोरों का शोर होता है और सांप औरतों की ओर खींच लिया जाता है। औरतें जीत जाती हैं। आश्चर्य नहीं। उनकी ओर ज्यादा खिलाड़ी भी तो थे। मर्द हंसकर कहते हैं, "अगले साल तक ठहरो। हम उन्हें हरा देंगे"
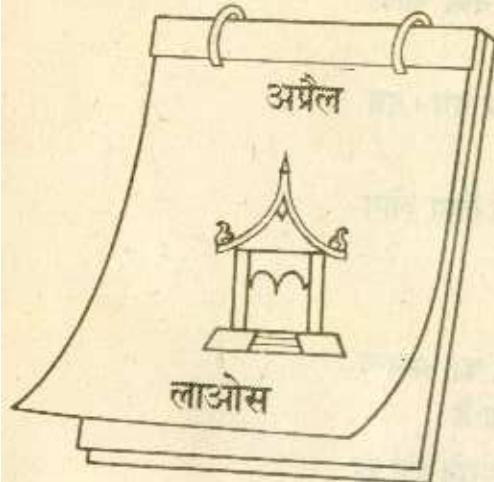
लाओस में नया साल

बहुत पहले की बात है। एक बूढ़ा ज्योतिषी था, जो बड़ा ही विद्वान था। वह हमेशा आकाश की ओर ताकता और सूर्य, चन्द्र और तारों की गति देखता रहता। जितना ही वह तारों के बारे में जानता उतनी ही अजीब बातों का पता उसको चलता। गर्मियों की अपेक्षा जाड़ों में सूरज ज्यादा देर से उगता और जल्दी डूबता है! 'हूं!' बूढ़े ने अपना सिर हिलाते हुए सोचा, 'यह तो अच्छी बात नहीं है। लोगों को सूरज की जरूरत है, रोशनी और धूप के लिए, और पेड़-पौधों को बढ़ने के लिए। जब जाड़ा आता है तो सूरज छिप क्यों जाता है?'

सारे पूर्वी देशों में बूढ़े ज्योतिषी का नाम फैल गया। हर जगह से लोग उसके पास सलाह मांगने आने लगे। एक दिन भीड़-की-भीड़ उससे मिलने आई।

'यह कोई जरूरी मामला लगता है।' बूढ़े ने सोचा। मामला जरूरी था भी। लोग उससे कहने आए थे कि वह उनको बताए कि वे नया साल किस दिन मनाएं।

बूढ़े ज्योतिषी ने अपनी दाढ़ी खुजलाते हुए बहुत सोचा, बहुत सोचा, 'कब? सचमुच कब?'

अचानक उसको याद आ गया, उसने जो तारों से सीखा था।

उसने सोचा, 'निस्संदेह! दिन रात का उल्टा है। रोशनी अंधेरे की विरोधी है। रोशनी का अर्थ है सौभाग्य, अच्छा भविष्य और खुशी। जवाब मिल गया मुझको। नया साल तब शुरू होना चाहिए जब दिन लम्बे होने लगे और रातें छोटी!'

बूढ़े ज्योतिषी ने अपने शिष्यों से पता लगाने को कहा कि ऐसा कब होता है। उनका जवाब पाते ही उसने पूर्व से आए लोगों से कहा, "चांदनी रात के पांचवें पखवाड़े में नया साल मनाओ।"

लोग यह सोचते हुए कि अब वे जल्दी ही नया साल मना सकेंगे, खुशी-खुशी घर गए। तब से वे बराबर उस बूढ़े ज्योतिषी से पूछने जाते कि, नया वर्ष किस दिन शुरू होगा।

आज भी लाओस में 'पिमाई' यानी नया साल कब शुरू होगा, यह जानने के लिए लोग ज्योतिषियों के पास जाते हैं। आम तौर पर यह अप्रैल में पड़ता है।

लाओस के लोग 'पिमाई' कैसे मनाते हैं?

पहले तो स्कूलों, कालेजों, दफ्तरों आदि में छुट्टी हो जाती है ताकि लोग त्योहार का आनन्द उठा सकें जो राजधानी लुआंग प्रबांग में एक हफ्ता और दूसरी जगह तीन दिन रहता है।

लाओस के लोगों का विश्वास है कि नये साल की देवी का आगमन होता है तो पुराने वर्ष की देवी चली जाती है। इनके जाने-आने के बीच में एक दिन ऐसा होता है जब कोई देवी नहीं होती। उस दिन सब बड़ी उत्सुकता से नई देवी के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं।

पिमाई का पहला दिन देवी की विदाई का दिन होता है। सब लोग चांदी के कटोरों में सुगंधित जल लेकर मंदिर जाते हैं, और नई देवी के स्वागत में सारी मूर्त्तियों को स्नान कराने में पुजारियों की सहायता करते हैं।

लाओस के लोगों को विश्वास है कि जल हर चीज को पवित्र कर देता है। बरमा की तरह इस मौके पर यहां पर एक-दूसरे पर पानी फेंकने का रिवाज है। सारे घर, ऊपर से नीचे तक, धोकर साफ किए जाते हैं।

अच्छा ही है कि आप सारे वक्त बिल्कुल भीगे रहें, वर्ना कोई पीछे से आकर आपके सिर पर कटोरा भर पानी उड़ेल देगा। अगर आप इस समय घर से बाहर हैं तो साथ में बाल्टी या पिचकारी रखें और जितना हो सके, पानी फेंकें।

लाओस के लोगों का विश्वास है कि 'पिमाई' के दिन आप जितना खुश रहेंगे, नया साल आपके लिए खुशियों से उतना ही भरा होगा।

मंदिरों में बालू ले जाने में भी आप शामिल हो सकते हैं, क्योंकि यह नये साल के अच्छे कामों में गिना जाता है। बालू मरम्मत के काम के लिए या जमीन पर बिछाने के लिए भी उपयोगी होती है।

बहुत-से लोग मन्दिर के आंगन में बालू के टीले बनाकर उन्हें फूलों और झंडियों से सजाते हैं और उन पर पैसे भी रख देते हैं। अगर आप अपने किसी अच्छे मित्र के साथ मिलकर बालू का टीला बनाएं तो इसका अर्थ है कि आप पूरे वर्ष अच्छे मित्र बने रहेंगे।

युवक और युवतियां जो आपस में विवाह करना चाहते हैं, इस मौके का लाभ उठा कर साथ-साथ बालू के टीले बनाते हैं।

दूसरा दिन जब देवी नहीं होती, 'दिन का ठहरना' कहलाता है। इस दिन कोई कठिन या खतरे का काम नहीं करना चाहिए क्योंकि देवी के बिना आपकी रक्षा कौन करेगा?

दिन जल्दी-जल्दी बीत जाए इसलिए माता-पिता बच्चों को देहात की ओर ले जाते हैं जहां पानी फेंकने का खेल अब भी जारी है।

'पिमाई' के तीसरे दिन, 'देवी के आगमन' के दिन सब चैन की सांस लेते हैं और खुश होते हैं।

देवी अपने साथ नया वर्ष लेकर आयी है। लोग खाने की चीजें और फूल ले जाकर मन्दिर में चढाते हैं और पूजा करते हैं।

घर लौटने पर, नये साल के स्वागत में हर एक अपनी उंगली में सफेद धागा बांध लेता है। इस समय बच्चे अपने मां-बाप से वायदा करते हैं कि वे पूरे वर्ष आज्ञाकारी रहेंगे। इसके बाद बच्चे उन पर सुंगधित जल छिड़कते हैं।

लाओस के बच्चे उन वायदों को कैसे भूल सकते हैं जो उन्होंने इतने आनन्द के साथ किए थे।
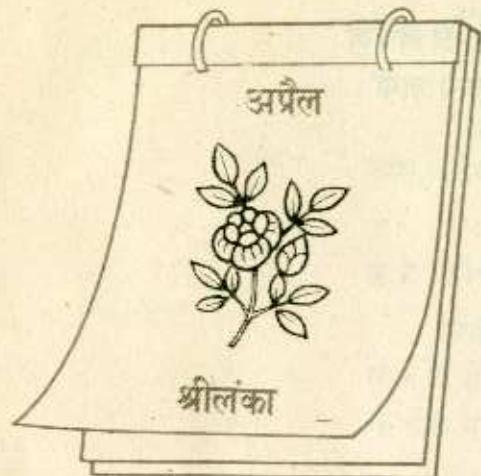
सिंहल और तमिल नव वर्ष

हिन्द महासागर के हमारे इस छोटे-से द्वीप श्रीलंका में अप्रैल के महीने में काम-काज की धूम मच जाती है जब छोटे-बड़े सब नये वर्ष के स्वागत की तैयारियां करने लगते हैं।

आज तेरह अप्रैल है और पंचिराला के घर में बड़ी रौनक है।

"मां, मां ! बाग में एरामुदु के पेड़ को तो देखो। लाल फूलों के गुच्छे-के-गुच्छे निकल आए हैं।" रसोई की ओर दौड़ कर आती हुई नन्हीं कमला कहती है।

"हां, कमला! एरामुदु का पेड़ हर वर्ष इस समय खिलता है हमें जताने के लिए कि नया साल जल्दी आनेवाला है।" कमला की मां रन मेणिके कहती है।

"नया साल! ओह! क्या इसीलिए पिछले हफ्ते पिताजी ने सारी दीवारों पर सफेदी की थी और सारे घर को धोया था? और क्या इसीलिए तुम हमारे लिए नये कपड़े सीं रही हो?" कमला ने पूछा।

"हां, इस साल हम सब पीले कपड़े पहनेंगे। जानती हो, क्यों?" रन मणिके ने पूछा।

कमला ने अपना सिर हिलाया।

"पीला इस साल का शुभ रंग है। हर साल जब ज्योतिषी तय करते हैं कि नया वर्ष किस दिन शुरू होगा, तो वे यह भी बताते हैं कि इस नये साल में कौन-सा रंग शुभ होगा। पिछले साल का रंग सफेद था, और उसके पहले लाल। याद है तुमको?" कमला ने सिर हिला दिया।

"मां, जो मिठाइयां तुम बना रही हो, क्या ये भी नये साल के लिए हैं?" उसने पूछा।

"हां, बेटी! अब आओ, मेरी मदद करो।" रन मेणिके ने कहा।

नन्हीं लड़की अपनी मां के पास एक स्टूल पर बैठ गई। अपने नन्हें हाथों से आटे की लोइयों को दबाकर चिपटी गोल शक्ल का बनाने लगी। मां उन्हें घी में एक-एक करके तलने लगी।

दोपहर तक छः- सात किस्म की मिठाइयां मेज पर तैयार थीं।

"कुहू! कुहू! कुहू!" एक छोटी चिड़िया गाने लगी।

"यह कौन-सी चिड़िया है?" कमला ने पूछा।
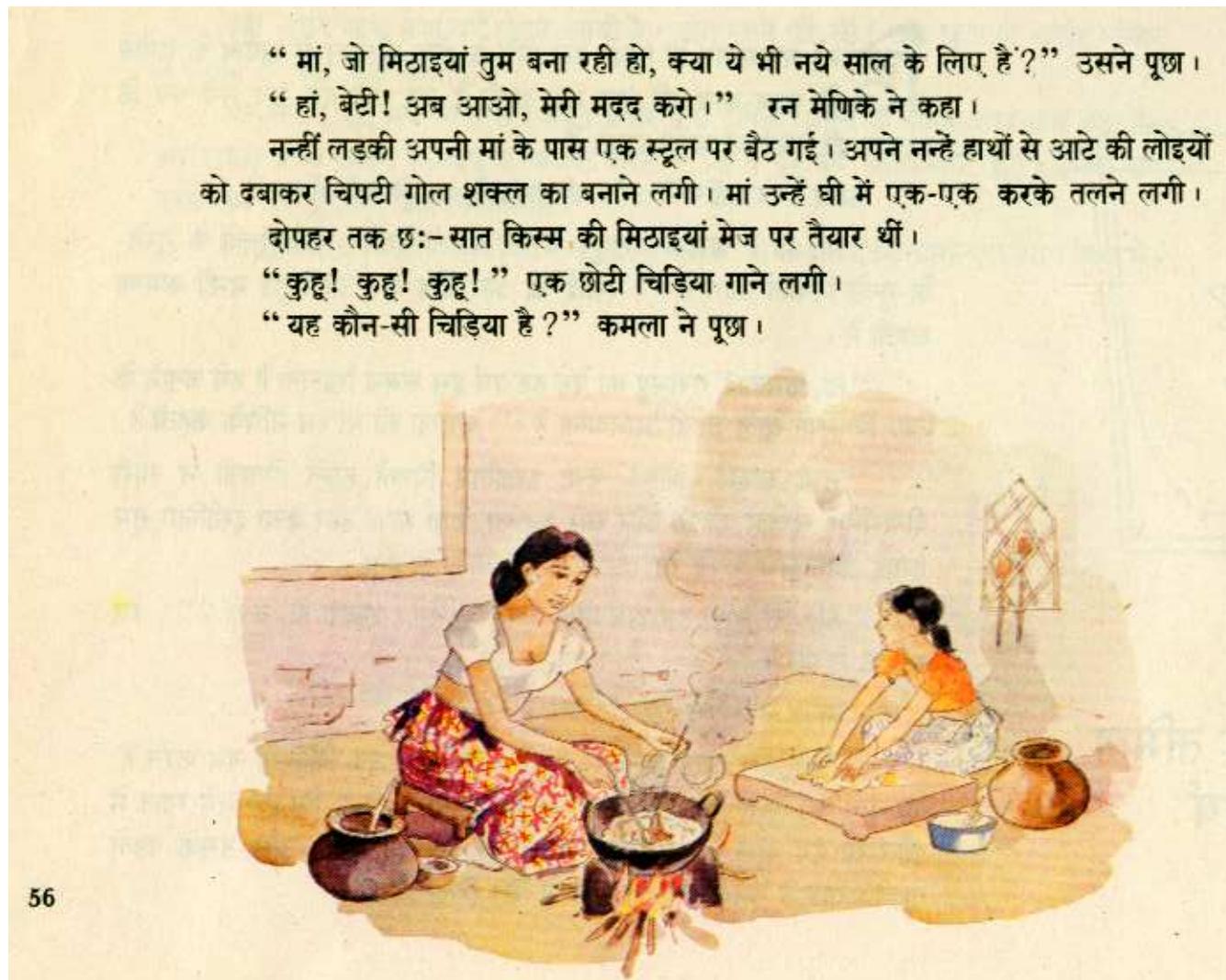
"यह कुट्टू है, जो हमेशा अप्रैल में आती है। यह बताती है कि नया वर्ष बहुत जल्दी आनेवाला है," मां जवाब देती है।

" नया साल कब आएगा ?" कमला ने पूछा।

"कल, कमला! कल! नये वर्ष का दिन है। तुम अपने पीले कपड़े पहनना, पटाखे छोड़ना, और, और अपनी सहेलियों के साथ जितना जी चाहे, गाना, नाचना, खेलना!" मां ने कहा।

" मां, मेरी सभी सहेलियों के बाग में झूले पडे हैं। सीता के घर में है, नलिनी के है, अशोका के है। मेरे लिए भी डालोगी ? पिछले साल उपाली ने कितना सुन्दर झूला बनाया था मेरे लिए।"

उपाली! . . . रन मेणिके थोडी देर के लिए चुप हो जाती है, क्योंकि उसको अपने अठारह साल के बेटे की याद हो आती है जो घर से भाग गया। नौ महीने बीत चुके। कहां होगा वह ? कोई भी बेटा नये साल पर तो मां-बाप का प्यार नहीं भुला सकेगा।

"मां, कल उपाली घर आएगा ?" मां की आंखों में आंसू देखकर कमला ने पूछा। वह मां को उदास नहीं देख सकती।

"जरूर आएगा। नया वर्ष उसे हमारे पास ले आएगा। देखो, वह तुम्हारे पिताजी फाटक के अन्दर अभी घुसे हैं।"

कमला पिता से मिलने बाहर भागी गयी और उनसे लिपट गई।

उसके पिता पंचिराला ने कहा, "लो कमला, ये रहे तुम्हारे पटाखे और गुब्बारे।"

"धन्यवाद, पिताजी," कमला ने खुशी से उछलते हुए कहा।

पंचिराला बाजार गया था नये साल के लिए घर के लिए जरूरी खाने-पीने का सामान खरीदने।

उसने आलू, शकरकन्द, कद्दू, बैंगन, काजू, केले और कटहल खरीदे थे। नये साल पर बनायी जानेवाली मिली-जुली तरकारी के लिए ये सातों चीजें चाहिए। वह दो नये बर्तन भी खरीद लाया था।

कमला ने फुसफुसा कर कहा, "कल के लिए मेरे पास झूला नहीं है।"

"अगर घर की सफाई करने में तुम मां की मदद करो तो मैं झूला डाल दूंगा। शाम को 'नोनागाथे' के शुरू होने से पहले घर की सफाई खत्म हो जानी चाहिए।"

"नोनागाथे क्या होता है?" कमला ने पूछा।

"वह अशुभ काल होता है। वह आज रात को शुरू होगा और कल सुबह खत्म होगा। इस समय हमें सारे काम रोक कर मन्दिर में जाकर प्रार्थना करनी चाहिए।" उसने कमला को समझाया।

कमला ने वायदा किया कि मां की मदद करेगी क्योंकि उसको अपनी सहेलियों की तरह झूला चाहिए था।

शाम तक पंचिराला के घर में नये वर्ष की तैयारियां हो चुकी थीं। घर चमाचम कर रहा था। बाग भी खूब साफ-सुथरा लग रहा था। और आम के पेड़ के नीचे झूला लटक रहा था जो पंचिराला ने कमला के लिए बनाया था।

बाद में शाम को, नोनागाथे के समय, सब लोग गांव के अन्य लोगों के साथ मन्दिर में गए भगवान बुद्ध और अन्य देवी-देवताओं की प्रार्थना करने, और उनकी दुआ मांगने।

दूसरे दिन सारा परिवार तड़के सवेरे उठा। मुंह-हाथ धोकर वे मन्दिर की घण्टी की प्रतीक्षा करने लगे जो नोनागाथे के खत्म हो जाने की घोषणा करने के लिए बजती।

नया वर्ष शुरू हुआ तो घण्टे बजने लगे। पूर्व की ओर मुंह करके रन मेणिके ने नये बर्तनों में नये वर्ष का भोजन पकाने के लिए चूल्हा जलाया।
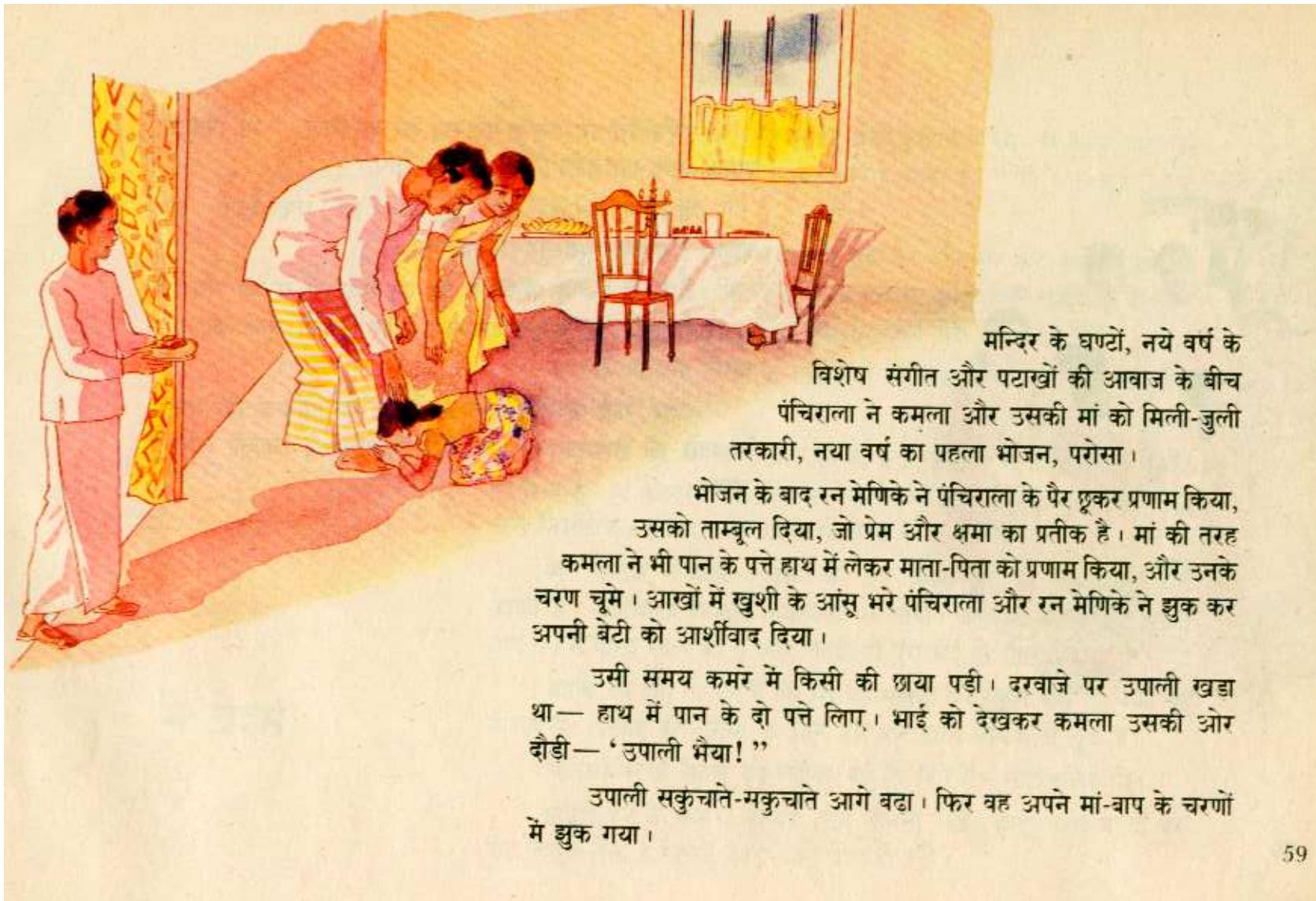
मन्दिर के घण्टों, नये वर्ष के विशेष संगीत और पटाखों की आवाज के बीच पंचिराला ने कमला और उसकी मां को मिली-जुली तरकारी, नया वर्ष का पहला भोजन, परोसा।

भोजन के बाद रन मेणिके ने पंचिराला के पैर छूकर प्रणाम किया, उसको ताम्बूल दिया, जो प्रेम और क्षमा का प्रतीक है। मां की तरह कमला ने भी पान के पत्ते हाथ में लेकर माता-पिता को प्रणाम किया, और उनके चरण चूमे। आखों में खुशी के आंसू भरे पंचिराला और रन मेणिके ने झुक कर अपनी बेटी को आर्शीवाद दिया।

उसी समय कमरे में किसी की छाया पड़ी। दरवाजे पर उपाली खड़ा था— हाथ में पान के दो पत्ते लिए। भाई को देखकर कमला उसकी ओर दौड़ी— 'उपाली भैया!"

उपाली सकुचाते-सकुचाते आगे बढ़ा। फिर वह अपने मां-बाप के चरणों में झुक गया।

उनके पैरों पर पान के पत्ते रख कर वह बोला, " मां, पिताजी, मुझको क्षमा कर दीजिए मेरी भूल के लिए।"

पंचिराला झुका, बेटे के सिर को थपथपाया, और बोला, " भगवान बुद्ध तुम्हारी रक्षा करें।"

थोड़ी ही देर में पंचिराला का घर मेहमानों से भर गया जो शुभकामनाएं और सौगात देने-लेने, और पिछली भूलों की क्षमा मांगने आ रहे थे।

बाहर, गांव के कोने-कोने से ढोलक की आवाज और बच्चों के गाने की आवाज आ रही थी, "ओंचिल्ली चिल्ली चिल्ला मलाइ . . ."

मे टाइम

मेरा नाम तो है जोस, लेकिन हर कोई बुलाता है पेपे। मैं बारह साल का हूं लेकिन फिर भी सारा वक्त लगा रहता है, "पेपे, यह करो; पेपे, वह करो। पेपे, यहां आओ।"

यह है मेरी बडी बहन फ्लोरा जो मुझ पर और मेरे छोटे भाई माउवी पर हुक्म चलाया करती है। पिछले हफ्ते से फ्लोरा दूसरी छोटी लडकियों के लिए मालाएं बना रही है जो वे गांव के चर्च में वर्जिन मेरी को भेंट करेंगी।

माउवी पूछता है, "सिर्फ लड़कियां ही क्यों मालाएं चढा सकती हैं? हम क्यों नहीं?"

मैं माउवी को, जो सात साल का है, क्या बताता? मैं तो खुद इस रिवाज से हैरान हूं। मां कहती है कि तीन से लेकर बारह वर्ष तक की लड़कियों ने यह रस्म निभाई है। हमेशा, और आगे भी ऐसा ही होना चाहिए।

मैंने माउवी से कहा, " होने दो। हम वर्जिन मेरी की प्रार्थना करें यही काफी है। फूलोंवाला मामला लड़कियों पर छोड़ो। आखिर, यह इतना जरूरी नहीं है। मैं बारह साल का हूं और जल्दी ही पूरा मर्द हो जाऊंगा।"

महत्व की बात तो यह है कि मई का महीना है। स्कूल नहीं हैं। गर्मी का मौसम है। पिताजी की बगिया के आम पक कर खाने लायक हो चुके हैं।

फ़िलिपीन्स के सबसे बडे त्योहार मई में पड़ते हैं – साटांक्रुजेन भी।

सांटाक्रुजेन है क्या? शायद आप जानना चाहें। हमारे गांव में तो यह एक जुलूस होता है जिसमें आगे-आगे बैण्ड होता है।

सभी उम्र के बच्चे जुलूस में होते हैं राजा-रानी की भड़कीली पोशाकों में सजे हुए। बड़े शहरों में यह केवल साल में एक बार, मई के महीने में, मनाया जाता है। लेकिन हमारे गाँव में हर रोज गोधूली के समय जुलूस निकलता है। फिर किसी के घर पर भोज होता है जिसमें सारे गांव को दावत दी जाती है। फिर खेल-तमाशे होते हैं , कार्निवल होता है।

सांटाक्रुजेन के जुलूस में जो लड़की सबसे सुन्दर होती है, उसको रानी हेलेना चुना जाता है। वह सफेद पोशाक पहनती है और हाथ में क्रॉस थामे रहती है। उसके साथ एक छोटा लड़का होता है जो हेलेना के पुत्र कॉंसटनटाइन के भेस में सजा होता है। उनके पीछे और रानियां होती है: एंजेल्स की रानी, फूलों की रानी, न्याय की रानी। वकील के चोगे में एक लड़की होती है और एक मुस्लिम शहजादी की पोशाक में।

फ्लोरा से पूछो तो वह इस जुलूस की कहानी बताएगी। "सांटाक्रुजेन असली क्रॉस के लिए रानी हेलेना की खोज की कहानी है। वह क्रॉस जिस पर ईसा मसीह को सूली चढ़ाया गया था। छोटा लड़का सम्राट कॉंसटनटाइन है जो बहुत समय पहले ईसाई बन गया था।"

मुझको यह कहानी बड़ी अच्छी लगती है। माउवी को भी। लेकिन वह जुलूसवाले बूढ़े से डरता है। यह मैथ्यूसला है, दुनिया का सबसे बूढ़ा आदमी। वह एक लम्बी-सी लालटेन लिए रहता है और गाड़ी में घूमता है। माउवी की जब भी उस पर नजर पड़ती है, वह डर से कांप जाता है।

जुलूस ऐसा कि देखो तो देखते रह जाओ। रंगबिरंगी झांकियां, गोटे-झालर वाले चोगे, जुलूस में चलने वालों के हाथों में जलती हुई मोमबत्तियां, प्रार्थना और लोकगीतों का मधुर गायन।

माउवी और मैं तो बस ठगे-से देखते रह जाते हैं।
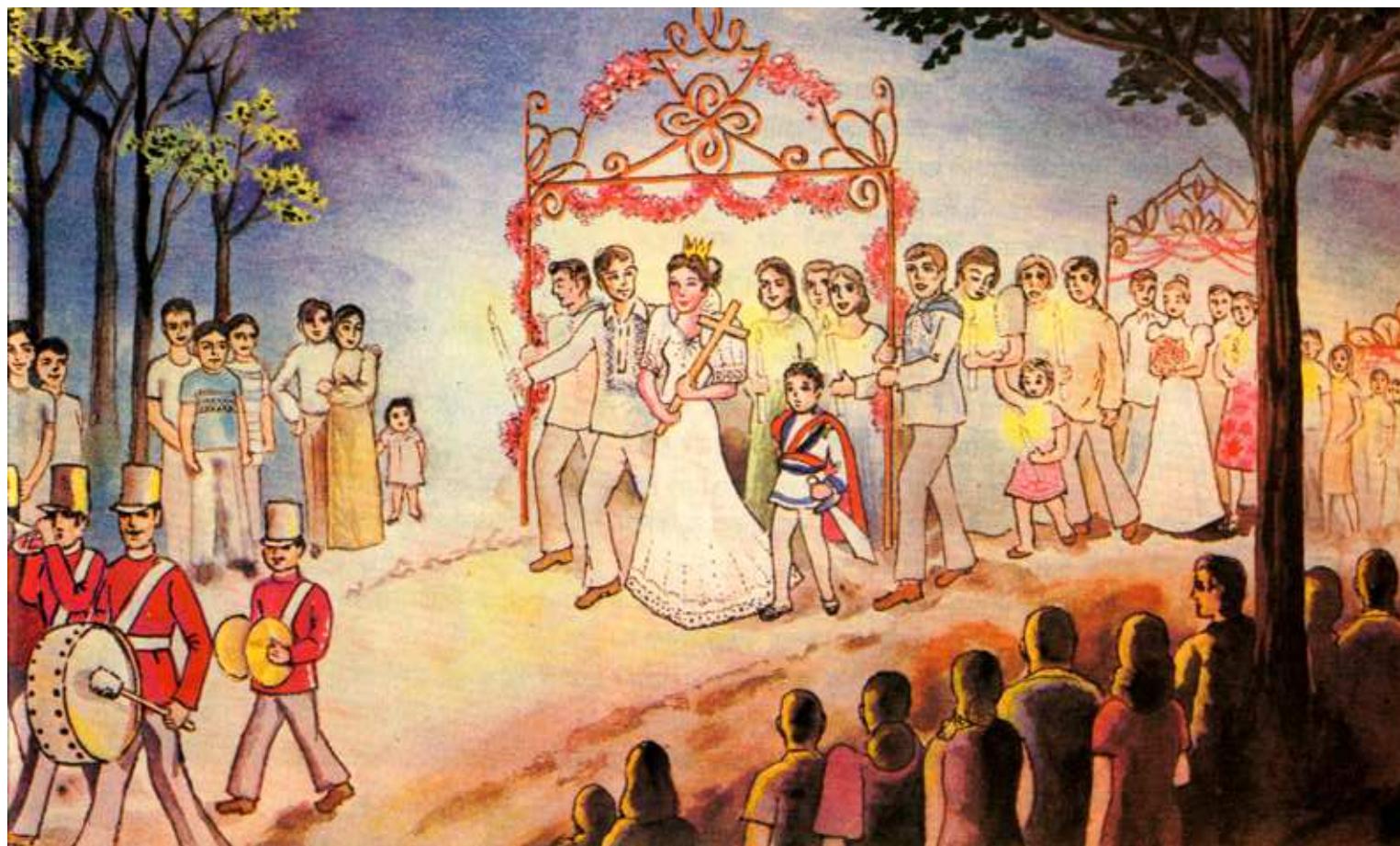
एक रहस्य की बात बताऊं ? आज हमारे परिवार के लिए खास दिन है क्योंकि दावत हमारे घर होगी। कल पड़ोसी नाना सीका के घर हुई थी। कल हमारे अध्यापक के घर होगी।

पिछले दो हफ्तों से मां और फ्लोरा तो मानो रसोईघर में ही रह रही हैं। सारे वक्त आज की दावत के लिए खाना पकाती रहती हैं।

हम मई के महीने में हर दिन भोज करते हैं और पूरे वर्ष हमें भोजन और अच्छा भाग्य देने के लिए प्रभु को धन्यवाद देते हैं।

अब फ्लोरा मदद के लिए मुझको पुकार रही है।

एक और रहस्य है। मां अपने घर में दावत कर रही हैं इसलिए जुलूस के लिए लड़कियां चुनने का अधिकार भी उन्हीं को है।

आज रात फ्लोरा रानी हेलेना बनेगी। वह बहुत खुश है लेकिन दिखाना नहीं चाहती। माउवी कॉंसटनटाइन बनेगा। आज पिताजी को कितना गर्व होगा!

मेरा काम है दावत के बाद खेलों का आयोजन करना। पिताजी और मैं बाग को तैयार कर लेंगे। रंगीन झंडे लगाएंगे, तिनकों की बनी कठपुतलियां लटकाएंगे, और इनाम तैयार करेंगे। यह काम मुझको सबसे अच्छा लगता है।

अगर आप फ्लोरा से पूछें कि उसको क्या अच्छा लगता है तो वह निश्चय ही कहेगी, चर्च में प्रार्थना और जुलूस। उसको मां की बात दुहराना अच्छा लगता है।

मई का बढ़िया महीना फसल के लिए धन्यवाद देने का समय है। सांटाक्रुजेन फसल-कटाई का त्योहार भी है और धार्मिक भी।

वह बड़ी गम्भीरता से कहती है, "पेपे, तुम खाते रहते हो, लेकिन कभी खाना देने के लिए भगवान को धन्यवाद भी देते हो ?"
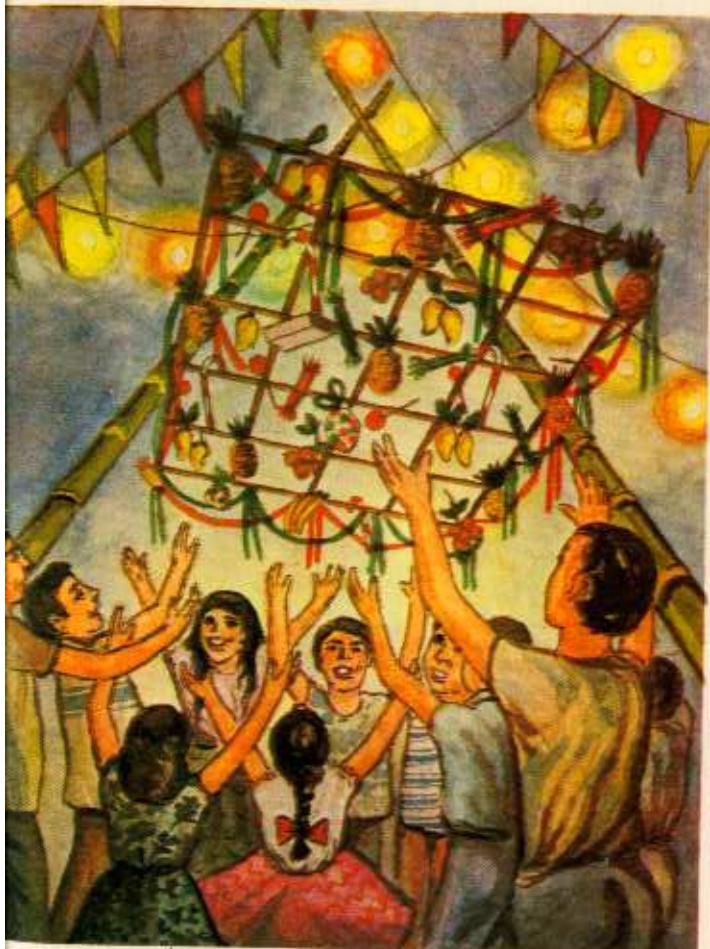
"जरूर देता हूं।" मैं उत्तर देता हूं, "माउवी भी देता है।" हां, यह और बात है कि रसभरा आम और नारियल का दुध पीते समय याद नहीं रहता! अब खेलों के बारे में।

मुझको पाबिटन नाम का खेल सबसे अच्छा लगता है। इसमें खोखले बांस में सिक्के, मिठाइयां और फल भर कर उसको बार-बार झुकाया और फिर उठाया जाता है। जब उसको झुकाते हैं तो सारे बच्चे उपहार लेने के लिए टूट पड़ते हैं।

एक मिट्टी के घड़े पर प्रहार करने का खेल भी होता है। सब की आंखों पर पट्टियां बांध दी जाती हैं और हाथ में लकड़ी दे दी जाती है। फिर सब उस घड़े को मारने की कोशिश करते हैं।

मैं एक ही बार मार पाता हूं जब उसमें से तरह-तरह के उपहार निकल पड़ते हैं एक और खेल जो हम सब इस मौके पर खेलते हैं, 'पालो-सेबो' कहलाता है। हम बांस के खम्भों पर चढ़ कर सबसे ऊंचे नारियल के पेड़ तक पहुंचने की कोशिश करते हैं। जो पहुंच जाता है, उसको वहां ढेर सारे पैसे और मिठाइयां रखी मिलती हैं।

शाम को नाच होता है। उसमें मुझको और माउवी को उतनी दिलचस्पी नहीं जितनी फ्लोरा को है।

हम दोनों को कार्निवल जाना अच्छा लगता है जहां हम घुड़सवारी कर सकते हैं और तमाशे देख सकते हैं। यह खेलों के बाद होगा।

पता नहीं इस समय घर में क्या हो रहा होगा?

मैं देखता हूं। वाह! मां ने हमारे पियानो को मोमबत्तियों और फ्लोरा के फूलों से पूजाघर की तरह सजा दिया है। केक काट कर मेज पर रख दिया गया है। पिताजी मुझको बाग में तैयारियां करने के लिए पुकार रहे हैं। यह काम मेरा है!